ॐ

पितृ पक्ष विशेषांक

सितंबर 2026

ज्योतिष वाटिका

अध्यात्म एवं ज्योतिष की सटीक जानकारी



- पितृ पक्ष का महत्व सनातन धर्म में इसका विशेष स्थान
- श्राद्ध, तर्पण और पिंडदान की विधि
- पितृ दोष लक्षण, कारण और उपाय
- पितरों को प्रसन करने के ज्योतिषीय और आध्यात्मिक उपाय
- गरूड़ पुराण में पितृ पक्ष का वर्णन
- कुल परंपरा, वंश और पितरों का आशीर्वाद

श्रद्धा से स्मरण, तर्पण से सम्मान-पितरों का आशीर्वाद ही जीवन की सच्ची पूंजी है।

www.jyotishvatika.com jyotishvatikamagazine@gmail.com / @ Jyotish Vatika 8584893845, 9804034464



ज्योतिष वाटिका

ज्योतिष एवं अध्यात्म की संपूर्ण पत्रिका



संपादक

सुभाष कुमार झा

सलाहकार

अरूण अग्रवाल

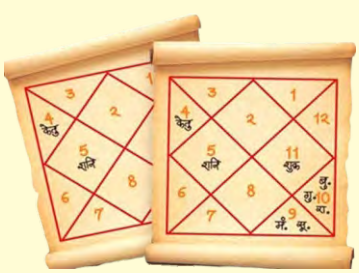
पूज्य हरिवंश जी महाराज

आचार्य विपुल वैदिक जी

कला एवं डिजाइन

प्रिंट मीडिया कम्प्यूटर

विज्ञापन एकाधिकार सुरक्षित





संपादकीय

आधुनिक युग की कसौटी पर ज्योतिष और सनातन संस्कृति



समय बदलता है, साधन बदलते हैं, परंतु मनुष्य के भीतर जो मूल प्रश्न सदियों से गूंजते आए हैं—मैं कौन हूँ, मेरा भविष्य क्या है, मेरे जीवन का प्रयोजन क्या है—वे आज भी उतने ही जीवंत हैं जितने हमारे ऋषि-मुनियों के काल में थे। यही वह बिंदु है जहाँ ज्योतिष विज्ञान अपनी सार्थकता सिद्ध करता है। आज जब मनुष्य तकनीक की चकाचौंध में जी रहा है, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से लेकर अंतरिक्ष यात्रा तक हर क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है, तब भी उसके मन की अशांति, दिशाहीनता और भविष्य की अनिश्चितता को शांत करने में ज्योतिष एक सशक्त माध्यम बनकर उभरा है।

ज्योतिष: केवल भविष्यवाणी नहीं, जीवन-दर्शन

अक्सर ज्योतिष को केवल भाग्य बताने वाली विद्या समझ लिया जाता है, जबकि वास्तव में यह ग्रहों, नक्षत्रों और मनुष्य के कर्मों के बीच के सूक्ष्म संबंधों को समझने का एक गहन विज्ञान है। यह हमें आत्मनिरीक्षण की दृष्टि देता है—हमें बताता है कि हमारी प्रकृति क्या है, हमारी चुनौतियाँ कहाँ हैं और हम अपने कर्मों से किस प्रकार अपने भविष्य को संवार सकते हैं। आधुनिक युग में जहाँ मानसिक तनाव, अनिश्चितता और प्रतिस्पर्धा चरम पर है, वहाँ ज्योतिष एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है—यह डर पैदा नहीं करता, बल्कि सही दिशा में प्रयास करने का विश्वास देता है।

विज्ञान और अध्यात्म को परस्पर विरोधी मानने वाला वर्ग आज भी मौजूद है, परंतु सत्य यह है कि ज्योतिष स्वयं गणित और खगोल विज्ञान की सुदृढ़ नींव पर खड़ा है। ग्रहों की गति, नक्षत्रों की स्थिति—यह सब सटीक गणनाओं पर आधारित है। आवश्यकता है तो केवल इस प्राचीन ज्ञान को आधुनिक संदर्भ में समझने और समझाने की।

हिंदू संस्कार: जीवन को दिशा देने वाली परंपरा

सनातन धर्म में सोलह संस्कारों की जो परिकल्पना की गई है, वह मनुष्य के जीवन को गर्भाधान से लेकर अंत्येष्टि तक एक सुसंस्कृत, अनुशासित और सार्थक यात्रा बनाने का प्रयास है। नामकरण, अन्नप्राशन, विद्यारंभ, उपनयन, विवाह—प्रत्येक संस्कार के पीछे एक गहरा मनोवैज्ञानिक और सामाजिक उद्देश्य छिपा है। ये संस्कार व्यक्ति को केवल धार्मिक कर्मकांडों में नहीं बाँधते, बल्कि उसमें कर्तव्यबोध, संयम और सामाजिक दायित्व की भावना जगाते हैं।

आज के भागदौड़ भरे जीवन में जब परिवार बिखर रहे हैं और मूल्यों का ह्रास हो रहा है, तब इन संस्कारों की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। ये हमें अपनी जड़ों से जोड़े रखते हैं और यह स्मरण कराते हैं कि जीवन केवल भौतिक उपलब्धियों का नाम नहीं, बल्कि आत्मिक उन्नति की एक सतत प्रक्रिया है।

पर्व-त्योहार: उत्सव में छिपा जीवन-संदेश

भारतीय पर्व-त्योहार केवल उल्लास और उत्सव के अवसर नहीं हैं, वे प्रकृति, समाज और अध्यात्म के बीच के तालमेल को दर्शाते हैं। मकर संक्रांति सूर्य के उत्तरायण होने का उत्सव है तो होली रंगों के माध्यम से आपसी भेदभाव मिटाने का संदेश देती है। दीपावली अंधकार पर प्रकाश की, असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक है, तो नवरात्रि शक्ति की आराधना के साथ-साथ आत्मशुद्धि का पर्व है।

सुभाष झा

ज्योतिष वाटिका पत्रिका

के आगामी अंक में

आलेख एवं विज्ञापन देने हेतु अनुरोध



"भेजें अपने लेख, धार्मिक एवं ज्योतिषीय खबरें"

धर्म, अध्यात्म, ज्योतिष, वास्तु, संस्कार, त्योहार, सनातन परंपराएं,
देवी-देवताओं की महिमा, प्रेरणादायक प्रसंग, शोध आधारित लेख,
कुंडली विश्लेषण, ज्योतिषीय समाधान आदि विषयों पर लेख आमंत्रित हैं।

यह आमंत्रण विशेष रूप से उनके लिए है जो–

- सनातन धर्म से जुड़े लोग
- कथावाचक / प्रवचनकर्ता
- ज्योतिषाचार्य / शोधकर्ता

संपर्क करें

"मैगज़ीन + न्यूज़पेपर + वेबसाइट एवं सोशल मीडिया प्रमोशन"

एक साथ



मैगज़ीन
रंगीन एवं आकर्षक डिज़ाइन के साथ



न्यूज़पेपर
व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँच



वेबसाइट
आपके लेख व विज्ञापन की ऑनलाइन उपस्थिति

सोशल मीडिया
लाखों लोगों तक प्रभावी प्रसार



संपर्क करें :

सुभाष झा

8584893845, 9804034464

Web : jyotishvatika.com

धर्म की रक्षा, संस्कृति का संवर्धन, सनातन का सम्मान – यही है ज्योतिष वाटिका का अभियान!

इस तरह करें पितरों का तर्पण, उतरता है पूर्वजों का ऋण, सारे कष्ट हो जाएंगे दूर



सुभाष झा
संपादक, ज्योतिष, वाटिका



पितरों का कर्ज चुकाना एक जीवन में तो संभव ही नहीं, उनके द्वारा संसार त्याग कर चले जाने के बाद भी श्राद्ध करते रहने से उनका ऋण चुकाने की परंपरा है। अगर पितर नाराज हो जाएं तो व्यक्ति का जीवन भी खुशहाल नहीं रहता और उसे कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यही नहीं घर में अशांति फैलती है और व्यापार व गृहस्थी में भी हानि झेलनी पड़ती है। ऐसे में पितरों को तृप्त करना और उनकी आत्मा की शांति के लिए पितृ पक्ष में श्राद्ध करना जरूरी माना जाता है।

श्राद्ध के जरिए पितरों की तृप्ति के लिए भोजन पहुंचाया जाता है और पिंड दान व तर्पण कर उनकी आत्मा की शांति की कामना की जाती है। श्राद्ध से जो भी कुछ देने का हम संकल्प लेते हैं, वह सब कुछ उन पूर्वजों को अवश्य प्राप्त होता है। जिस तिथि में जिस पूर्वज का स्वर्गवास हुआ हो उसी तिथि को उनका श्राद्ध किया जाता है जिनकी परलोक गमन की तिथि ज्ञान न हो, उन सबका श्राद्ध अमावस्या को किया जाता है।

दिन का महत्व

जो पूर्णमासी के दिन श्राद्ध आदि करता है उसकी बुद्धि, पुष्टि, स्मरणशक्ति, धारणाशक्ति, पुत्र-पौत्रादि एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती। वह पर्व का पूर्ण फल भोगता है। प्रतिपदा धन-सम्पत्ति के लिए होती है एवं श्राद्ध करने वाले की प्राप्त वस्तु नष्ट नहीं होती। जो सप्तमी को श्राद्ध आदि करता है उसको महान यज्ञों के पुण्य फल प्राप्त होते हैं। अष्टमी को श्राद्ध करने वाला सम्पूर्ण समृद्धियां प्राप्त करता है। नवमी को श्राद्ध करने से ऐश्वर्य एवं मन के अनुसार अनुकूल चलने वाली स्त्री को प्राप्त करता है। दशमी तिथि का श्रद्धा मनुष्य ब्रह्मत्व की लक्ष्मी प्राप्त कराता है।



श्राद्ध विधि

पौराणिक ग्रंथों के अनुसार श्राद्ध करने की भी विधि होती है। यदि पूरे विधि विधान से श्राद्ध कर्म न किया जाए तो वह श्राद्ध कर्म निष्फल होता है और पूर्वजों की आत्मा अतृप्त ही रहती है। शास्त्रसम्मत मान्यता यही है कि किसी सुयोग्य विद्वान ब्राह्मण के जरिए ही श्राद्ध कर्म (पिंड दान, तर्पण) करवाना चाहिए।

श्राद्ध कर्म में पूरी श्रद्धा से ब्राह्मणों को तो दान दिया ही जाता है साथ ही यदि किसी गरीब, जरूरतमंद की सहायता भी आप कर सकें तो बहुत पुण्य मिलता है। इसके साथ-साथ गाय, कुत्ते, कौवे आदि पशु-पक्षियों के लिए भी भोजन का एक अंश जरूर डालना चाहिए। श्राद्ध करने के लिए सबसे पहले जिसके लिए श्राद्ध करना है उसकी तिथि का ज्ञान होना जरूरी है। जिस तिथि को मृत्यु हुई हो उसी तिथि को श्राद्ध करना

चाहिए। लेकिन कभी-कभी ऐसी स्थिति होती है कि हमें तिथि पता नहीं होती तो ऐसे में आश्विन अमावस्या का दिन श्राद्ध कर्म के लिए श्रेष्ठ होता है क्योंकि इस दिन सर्वपितृ श्राद्ध योग माना जाता है। दूसरी बात यह भी महत्वपूर्ण है कि श्राद्ध करवाया कहां पर जा रहा है। यदि संभव हो तो गंगा नदी के किनारे पर श्राद्ध कर्म करवाना चाहिए। यदि यह संभव न हो तो घर पर भी इसे किया जा सकता है। जिस दिन श्राद्ध हो उस दिन ब्राह्मणों को भोजन करवाना चाहिए। भोजन के बाद दान दक्षिणा देकर भी उन्हें संतुष्ट करें।



इन पांच जीवों का ही चुनाव क्यों किया गया है

हमारे पितर धरती पर आकर हमें आशीर्वाद देते हैं। पितृ पक्ष में पितरों का श्राद्ध करना बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। हमारे पितृ पशु पक्षियों के माध्यम से हमारे निकट आते हैं और गाय, कुत्ता, कौवा और चींटी के माध्यम से पितृ आहार ग्रहण करते हैं।

श्राद्ध के समय पितरों के लिए भी आहार का एक अंश निकाला जाता है, तभी श्राद्ध कर्म पूरा होता है। श्राद्ध करते समय पितरों को अर्पित करने वाले भोजन के पांच अंश निकाले जाते हैं गाय, कुत्ता, चींटी, कौवा और देवताओं के लिए।

कुत्ता जल तत्त्व का प्रतीक है, चींटी अग्नि तत्व का, कौवा वायु तत्व का, गाय पृथ्वी तत्व का और देवता आकाश तत्व का प्रतीक हैं। इस प्रकार इन पांचों को आहार देकर हम पंच तत्वों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। केवल गाय में ही एक साथ पांच तत्व पाए जाते हैं। इसलिए पितृ पक्ष में गाय की सेवा विशेष फलदाई होती है।

कुछ बातों का ध्यान रखना भी जरूरी

1. श्राद्ध करने के लिए ब्रह्मवैवर्त पुराण जैसे शास्त्रों में बताया गया है कि दिवंगत पितरों के परिवार में या तो ज्येष्ठ पुत्र या कनिष्ठ पुत्र और अगर पुत्र न हो तो नाती, भतीजा, भांजा या शिष्य ही तिलांजलि और पिंडदान देने के पात्र होते हैं।

2. पितरों के निमित्त सारी क्रियाएं गले में दाये कंधे मे जनेउ डाल कर और दक्षिण की ओर मुख करके की जाती है।

3. कई ऐसे पितर भी होते है जिनके पुत्र संतान नहीं होती है या फिर जो संतान हीन होते हैं। ऐसे पितरों के प्रति आदर पूर्वक अगर उनके भाई भतीजे, भांजे या अन्य चाचा ताउ के परिवार के पुरूष सदस्य पितृपक्ष में श्रद्धापूर्वक व्रत रखकर पिंडदान, अन्नदान और वस्त्रदान करके ब्राह्मणों से विधिपूर्वक श्राद्ध कराते है तो पितर की आत्मा को मोक्ष मिलता है।

एकादशी का श्राद्ध सर्वश्रेष्ठ दान

एकादशी का श्राद्ध सर्वश्रेष्ठ दान है। वह समस्त वेदों का ज्ञान प्राप्त कराता है। उसके सम्पूर्ण पापकर्मो का विनाश हो जाता है तथा उसे निरंतर ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। वहीं, द्वादशी तिथि के श्राद्ध से राष्ट्र का कल्याण तथा प्रचुर अन्न की प्राप्ति कही गई है। त्रयोदशी के श्राद्ध से संतति, बुद्धि, धारणाशक्ति, स्वतंत्रता, उत्तम पुष्टि, दीघार्यु तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

ऐसे करें श्राद्ध

- श्राद्ध करने के लिए किसी ब्राह्मण को आमंत्रित करें, भोज कराएं और अपनी सामर्थ्य के अनुसार दक्षिणा भी दें।
- श्राद्ध के दिन अपनी सामर्थ्य या इच्छानुसार खाना बनाएं।
- आप जिस व्यक्ति का श्राद्ध कर रहे हैं उसकी पसंद के मुताबिक खाना बनाएं जो उचित रहेगा।

उन्नति के लिए क्यों जरूरी है पितृ तर्पण

एकैकस्य तिलैर्मिश्रांस्त्रींस्त्रीन दद्याज्जलाज्जलीन।
यावज्जीवकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति।

अर्थात जो अपने पितरों को तिलमिश्रित जल से तीन-तीन अंजलियां जल की प्रदान करता है, उसके जन्म से तर्पण के दिन तक के पापों का नाश हो जाता है।

माता-पिता की सेवा को सबसे बड़ी पूजा माना गया है। जो जीवन रहते उनकी सेवा नहीं कर पाते, उनके देहावसान के बाद बहुत पछताते हैं। इसीलिए हिंदू धर्म शास्त्रों में पितरों का उद्धार करने के लिए पुत्र की अनिवार्यता मानी गई है। राजा भागीरथ ने अपने पूर्वजों के उद्धार के लिए गंगा जी को स्वर्ग से धरती पर ला दिया। जन्मदाता माता-पिता को मृत्योपरांत लोग विस्मृत न कर दें इसलिए उनका श्राद्ध करने का विशेष विधान बताया गया है।





सहस्त्रार चक्र कैसे एक्टिव हो जाते हैं पितृपक्ष में



भगवद् कथावाचिका
कल्पना पंडित



सहस्त्रार चक्र सिर के शिखर पर स्थित है। इसे हजार पंखुडियों वाले कमल, ब्रह्म रन्ध्र (ईश्वर का द्वार) या लक्ष किरणों का केन्द्र भी कहा जाता है, क्योंकि यह सूर्य की भांति प्रकाश का विकिरण करता है। अन्य कोई प्रकाश सूर्य की चमक के निकट नहीं पहुंच सकता। इसी प्रकार, अन्य सभी चक्रों की ऊर्जा और विकिरण सहस्त्रार चक्र के विकिरण में धूमिल हो जाते हैं।

यह विशुद्ध प्रकाश है, जिसमें सभी रंग हैं। सभी नाड़ियों की ऊर्जा इस केन्द्र में एक हो जाती है, जैसे हजारों नदियों का पानी सागर में गिरता है। यहां अन्तरात्मा शिव की पीठ है। सहस्त्रार चक्र के जाग्रत होने का अर्थ दैवी चमत्कार और सर्वोच्च चेतना का दर्शन है। जिस प्रकार सूर्योदय के साथ ही रात्रि ओझल हो जाती है, उसी प्रकार सहस्त्रार चक्र के जागरण से अज्ञान धूमिल (नष्ट) हो जाता है।

पितृ पक्ष के दौरान सहस्त्रार चक्र को भावातीत ध्यान द्वारा विशेष रूप से आप एक्टिव कर सकते हैं। ध्यान-योग द्वारा आपको वो सारी दिव्य शक्तियां प्राप्त हो जाएगी। जिसकी कामना आपके मन को सदियों से हैं। आन्तरिक खुशी, दैवीय गुण, चमकता हुआ आभामंडल, सकारात्मक मानसिकता ये सारे अलौकिक गुण आपको प्राप्त हो जाएंगे। इसलिए भावातीत ध्यान को विश्व में इतना अधिक महत्व दिया गया है।

यह चक्र योग के उद्देश्य का प्रतिनिधित्व करता है- आत्म अनुभूति और ईश्वर की अनुभूति, जहां व्यक्ति की आत्मा ब्रह्मांड की चेतना से जुड़ जाती है। जिसे यह उपलब्धि मिल जाती है, वह सभी कर्मों से मुक्त हो जाता है और मोक्ष प्राप्त करता है - पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र से पूरी तरह स्वतंत्र। ध्यान में योगी निर्विकल्प समाधि (समाधि का उच्चतम स्तर) सहस्त्रार चक्र पर पहुंचता है, यहां मन पूरी तरह निश्चल हो जाता है और ज्ञान, ज्ञाता और ज्ञेय एक में ही समाविष्ट होकर पूर्णता को प्राप्त होते हैं। भावातीत साधना समाधि कई तरह के नाम आप लोगों ने सुने होंगे। इसका वेदों में भी वर्णन किया गया है। ये जो परा की चेतना है कि हमारी आत्मा का स्तर है। अगर भगवान से मिलना है तो पहले अपने आप से मिलना होगा। अपनी चेतना में स्थिर हो जाएं तो भगवान अपने आप मिल जाएंगे। ये भावातीत ध्यान की जो प्रक्रिया है। ये उस चेतना के स्तर में जाने का एक बहुत ही सरल तरीका है। जब लोग एक साथ मिलकर सामूहिक ध्यान में भाग लेते हैं तो इसका प्रभाव सिर्फ हमारे अपने तक ही नहीं पूरे वातावरण में पूरे शहर में पूरे देश एवं पूरे विश्व में फैलता है।



आप खुद को दूसरों से अलग करने लगेंगे। आपको अकेले समय बिताना बहुत पसंद आएगा और इस समय का उपयोग आप खुद को सुधारने, अपने चेतना को ऊपर उठाने के लिए करेंगे। इस चक्र के जागरण के पहले आप बाहर की ओर देखते हैं, इस दुनिया को देखते हैं लेकिन जैसे ही सहस्त्रार जाग्रत होने लगता है आप खुद के अंदर देखना शुरू करते हैं। आप आध्यात्मिकता की तरफ बढ़ते हैं क्राउन चक्र के जाग्रत होने से लोगों के अंदर आध्यात्मिक जुड़ाव की गहन भावना आने लगती है। आपको ईश्वर, दिव्यता, आत्मा और चेतना जैसे शब्द और टॉपिक्स आकर्षित करने लगेंगे।

तर्पण से तृप्ति तक: दिव्यता को समझें



ज्योतिषाचार्य पूनम दीक्षित
अंक ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र विशेषज्ञ



श्राद्ध शब्द का अर्थ: श्रद्धा पूर्वक पितरों के लिए विधिपूर्वक जो कर्म किया जाता है उस कर्म को श्राद्ध कहते हैं। ब्रह्म पुराण के अनुसार देश काल में पात्र द्वारा विधि पूर्वक श्रद्धा से पितरों के उद्देश्य से जो कार्य किया जाए वह श्राद्ध कहलाता है। देश का अर्थ स्थान है काल का अर्थ समय है पात्र का अर्थ वह ब्राह्मण है जिसे हम श्राद्ध की सामग्री दे रहे हैं इन तीनों को भली-भांति समझ लेना चाहिए।

धर्म शास्त्रों के अनुसार विधि पूर्वक किया गया श्राद्ध पितरों को तृप्ति एवं मुक्ति देता है श्राद्ध करने वाले व्यक्ति को भी आयु पुत्र धन-धान्य पुष्टि और यश प्रदान करता है श्राद्ध में कमी रहने पर श्राद्ध कर्ता का कल्याण नहीं होता अपितु कष्ट भोगना पड़ता है। श्राद्ध करने का सबसे उत्तम समय दोपहर 11:00 बजे से लेकर 12:30 बजे तक का होता है। उस समय को शास्त्रों में कुतप योग कहा गया है। हालाँकि समय के अभाव में प्रातः काल श्राद्ध कर सकते हैं लेकिन दोपहर के बाद श्राद्ध नहीं करना चाहिए।

श्राद्ध में ब्राह्मण भोजन से पहले ग्रास बलि अवश्य निकालनी चाहिए जो कई तरह का होता है:

- भोजन पत्ते पर रखकर गाय को खिलाना चाहिए।
- पत्ते पर भोजन रखकर कुत्ते को खिलाना चाहिए।
- भूमि पर डालकर कौवे को खिलाना चाहिए। इसे घर की छत पर भी डाल सकते हैं।
- पत्ते पर रखकर देवताओं के लिए अन्न निकाले यह भी गाय को खिलाना चाहिए।
- चींटी आदि के लिए भी भोजन निकाला जाता है।
- अग्नि के लिए भोजन निकालकर थोड़ा अन्न अग्नि में डालकर शेष अन्न गाय को खिला देना चाहिए।

इस प्रकार भोजन निकाल कर उसके पश्चात ब्राह्मण को भोजन करना चाहिए। श्रद्धा पूर्वक किया गया कर्म ही पूर्ण फल प्रदान करता है और अश्रद्धा से किया गया कर्म निष्फल हो जाता है इसलिए श्राद्ध करते समय अपने पितरों के प्रति एवं भोजन करने वाले ब्राह्मण के प्रति श्रद्धा भाव रखें।

पितरों को क्या अत्यंत प्रिय हैं ?:

पितरों की प्रसन्नता की प्राप्ति के लिए दौहित्र (दोहते) को भोजन अवश्य करना चाहिए। तिल व कुशा हाथ में लेकर किया गया संकल्प, चांदी का दान, भगवान के नाम का जप इत्यादि पितरों को प्रसन्न करने वाले हैं। श्राद्ध में दूध, गंगाजल, शहद, फल, दही, धान, तिल, गेहूं, मूंग और सरसों का तेल यह शुभ माने गए हैं। तुलसी पत्र का प्रयोग भी श्राद्ध में अवश्य करना चाहिए क्यूँकि तुलसी की गंध से पितृ गण प्रसन्न होकर वैकुंठ जाते हैं। फलों में आम, बेल, अनार, आंवला, नारियल, खजूर, अंगूर, केला इत्यादि फल शुभ माने गए। श्राद्ध में चंदन की सुगंध को भी शुभ माना गया है।

श्राद्ध में ब्राह्मण की महिमा

श्राद्ध में हर किसी को भोजन कराने का विधान नहीं है। पवित्र, बुद्धिमान, सदाचारी, संध्या वंदन करने वाला ब्राह्मण भोजन कराने योग्य कहा गया है। जो ब्राम्हण गायत्री मंत्र का जप करता है वह श्राद्ध में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। चोर, धर्म से भ्रष्ट हुए ब्राह्मण, नास्तिक ब्राह्मण, मूर्ख ब्राह्मण, कपटी ब्राम्हण, व्यापारी ब्राह्मण, सेवा कार्य करने वाले नौकर ब्राम्हण, गंदे नाखून वाले ब्राह्मण, काले दांत वाले ब्राह्मण, गुरु से बैर भाव रखने वाले ब्राह्मण, अपने कुल से अलग कुल में विवाह करने वाले ब्राह्मण एवं अधम ब्राह्मण को श्राद्ध में भोजन नहीं कराना चाहिए।

कैसा भोजन श्राद्ध में निषेध है ?

जिस भोजन में बाल गिर गया हो, जिस अन्न में कीड़े पड़ गए हो, जिस भोजन पर कुत्ते की दृष्टि पड़ गई हो ऐसा भोजन श्राद्ध में ब्राह्मण को नहीं खिलाना चाहिए। बांसी एवं दुर्गंध युक्त भोजन भी श्राद्ध में नहीं कराना चाहिए। मदिरा बीड़ी तंबाकू इत्यादि भी श्राद्ध में दान नहीं करना चाहिए। जिस भोजन पर पहने हुए वस्त्र की हवा लग जाए वह भी श्राद्ध में वर्जित है। राजमा, साबुत उड़द, मसूर, अरहर, गाजर, गोल लौकी, बैंगन, शलगम, हींग, प्याज, लहसुन, काला नमक, काला जीरा, सिंघाड़ा, जामुन, सुपारी भी श्राद्ध में निषेध है। श्राद्ध में कभी भी मांस का भोजन नहीं खिलाना चाहिए ऐसा करने वाले के पितृ नरक में चले जाते हैं। सात्विक भोजन एवं फलों से ही पितरों की तृप्ति होती है।

भोज की व्यवस्था

ब्राह्मण को बिठाने के लिए रेशमी कंबल एवं कुशा का आसन श्रेष्ठ है। श्राद्ध में भोजन कराते समय मौन रहे। ब्राह्मण भी मौन रहकर भोजन करें मांगने के लिए हाथ से संकेत कर सकते हैं। श्राद्ध में ब्राह्मण के चरण बिठाकर धुलाने चाहिए क्यूंकि ब्राह्मण को खड़े कर चरण धुलाने पितृ निराश होकर लौट जाते हैं। पत्नी को अपनी दाई और खड़ा करें। श्राद्ध में भोजन कराते समय भोजन की निंदा अथवा प्रशंसा न करें ब्राह्मण से यह भी न पूछे भोजन कैसा बना है।



पितृ ऋण का रहस्य

क्यों आवश्यक है श्राद्ध और तर्पण



ज्योतिषाचार्य रति शुक्ला
Mob :9971593878

पितृ दोष-पितृ का शाब्दिक अर्थ पूर्वज या मृत प्रियजन होता है और दोष का शाब्दिक अर्थ दोष होता है। इन दो शब्दों को मिलाकर, हम इस विचार पर पहुँच सकते हैं कि पितृ दोष नाम से कुछ प्रकार के दोषों का पता चलता है जिनका पूर्वजों के साथ किसी प्रकार का संबंध है। आमतौर पर पितृ दोष की व्याख्या पितरों के श्राप के रूप में की जाती है। यदि आपकी कुंडली में पितृ दोष बनता है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि आपके पितृ पूर्वज आपको कोस रहे हैं, इसका अर्थ है कि आपके पितृ स्वयं अपने बुरे कर्मों के कारण शापित हैं। इस श्राप का एक हिस्सा या कर्म रिण आप को भेज दिया गया है। पितृ दोष पारिवारिक रेखा के कर्म रिण का एक भाग है और आपको यह स्वीकार करना होगा कि आप चाहते हैं या नहीं।

सरल शब्दों में, किसी व्यक्ति की कुंडली में एक पितृ दोष का निर्माण होता है, जब उसके पूर्वजों ने अपनी जीवन यात्रा में कोई गलती, अपराध या पाप किए हैं तो बदले में, व्यक्ति को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उन रिणों के लिए तय किए गए विभिन्न दंडों का अनुभव करके कर्म रिण का भुगतान करने के लिए समझा जाता है। व्यक्ति को तब तक इससे गुजरना पड़ता है जब तक कि या तो सजा काटकर या अच्छे कार्यों को करने के द्वारा रिण को मंजूरी नहीं दी जाती है।



पितृ दोष क्यों होता है ?

हम सभी अपनी पारिवारिक रेखाओं से अलग-अलग प्रतिशत में कई अच्छी और साथ ही बुरी चीजों को विरासत में प्राप्त करते हैं। हम अपने परिवार की रेखाओं से अलग प्रतिशत में विरासत में प्राप्त कर सकते हैं। हमारे चेहरे, हमारे शरीर की संरचनाएं, दुबला या मोटा होने की प्रवृत्ति, छोटी या लंबी, विशिष्ट प्रकार की प्रतिरक्षा, कुछ विशिष्ट रोगों के लिए कमजोरियां और साथ ही कुछ विशिष्ट बीमारियों के प्रति प्रतिरक्षा, रक्त समूह, निवास, धन गुण, रिण, अच्छा नाम, बुरा नाम और ऐसी कई अन्य चीजें। इसी तरह, हम रचनात्मकता, क्रोध, दया, क्रूरता, धैर्य, आवेग, जैसे अध्यात्मिक या भौतिक दृष्टिकोण में निहित आदतें या व्यक्तित्व लक्षण प्राप्त कर सकते हैं, और कई अन्य अच्छी और बुरी चीजें, गुण, और लक्षण।

उसी तरह, हम अपनी पारिवारिक रेखाओं से, अलग-अलग प्रतिशत में, कुछ विशिष्ट डोमेन में किए गए अच्छे या बुरे कर्मों को आगे बढ़ाते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आपके पिता और दादा ने आपके परिवार में महिलाओं के साथ-साथ सामान्य रूप से महिलाओं से संबंधित बुरे कर्मों को दोहराया है, तो वे इन बुरे कर्मों द्वारा गठित रिण को वहन करते हैं जो शुक्र के क्षेत्र में आते हैं, चूंकि महिलाएं, सामान्य रूप से, शुक्र द्वारा शासित होती हैं। जैसा कि आप इस परिवार में पैदा हुए हैं, आप अपने बुरे कर्मों द्वारा गठित इस रिण काएक हिस्सा



ले सकते हैं और यह रिण आपकी कुंडली में पितृ दोष के रूप में परिलक्षित होता है।यह आपकी कुंडली में शुक्र द्वारा गठित पितृ दोष के रूप में परिलक्षित होता है।

दो तरह के पितरों से पितृ दोष प्रभावित करता है-

अधोगति वाले पितरों के कारण-इसमें पूर्वजों द्वारा किया गलत व्यवहार, अयोग्य इच्छाओं, संपत्ति के प्रति मोह, परिवार के सदस्यों द्वारा गलत फैसले और परिवार के किसी व्यक्ति को अनुचित कष्ट देने पर पूर्वज उन्हें विभिन कष्ट देकर प्रताड़ित करते हैं।

उर्धवगति वाले पितरों के कारण-यह पितृ पितृदोष उत्पन्न नहीं करते परन्तु उनका किसी भी रूप में अपमान होने पर अथवा पारंपरिक रस्म-रिवाजों का बहिष्कार करने पर पितृदोष उत्पन्न होता हैं।

पितृ दोष के नौ प्रकार

इसी प्रकार, आठ अन्य प्रकार के पितृ दोष और कुल नौ है। नौ ग्रहों या नवग्रह में से हर एक द्वारा गठित। आपके पूर्वजों ने किस प्रकार के कर्म रिण के आधार पर अगर उन्होंने ऐसा करना शुरू किया है। आपकी कुंडली में पितृ दोष एक दो या दो से अधिक ग्रहों से बन सकता है। ऐसे पितृ दोष आपको कई अलग-अलग तरीकों से परेशान कर सकते हैं और इस तरह की परेशानियों का मूल कारण ग्रह का महत्व है जो इस तरह के पितृ दोष का कारण बनता है। आइए पितृ दोष के वास्तविक अर्थ को देखने का प्रयास करें जिसका उल्लेख मूल रूप से हमारे प्राचीन वैदिक शास्त्रों में किया गया है।

पितृ दोष पैदा करने वाले कारण

कुंडली में पितृ दोष पैदा करने वाले कई कारण हो सकते हैं, जो निम्नानुसार हैं:-

- वैदिक ज्योतिष के अनुसार, जिस परिवार में अपने पूर्वजों की पूजा नहीं होती उन्हें पितृ दोष प्राप्त होता है।
- ऐसा माना जाता है कि पीपल के पेड़ को पितरों का निवास माना जाता है। ऐसी स्थिति में पीपल का पेड़ काटना या उसके नीचे अशुद्वता फैलाना भी पाप है।
- यदि व्यक्ति पिता या माता की मृत्यु के बाद दूसरे जीवित परिवार का अपमान करता है, तो भी पूर्वजों को चोट लगती है, जो कुंडली में पितृ दोष का कारण बनता है।

पितृ दोष कैसे पता चलेगा

अगर कोई पितृ दोष को दूर करना चाहता है तो उन्हें सबसे पहले यह जानना होगा कि इसे कैसे पहचाना जाए या पितृ दोष का निवारण जिसके माध्यम से वे इसे दूर करने का सबसे अच्छा तरीका निकाल सकें।

- यदि किसी व्यक्ति के जीवन में धन की कमी है, तो उसकी कुंडली में पितृदोष हो सकता है।
- यदि घर का कोई व्यक्ति बार-बार अपनी शादी में परेशानियों का सामना कर रहा है, तो उसकी कुंडली में पितृ दोष हो सकता है।
- अगर परिवार में हमेशा कलेश का माहौल बना रहता है तो यह पितृ दोष के कारण भी हो सकता है।
- यदि कोई हमेशा घर में हर समय बीमार रहता है, तो पिता को घर में शांति के उपाय करने चाहिए।
- जो लोग पितृ दोष से पीड़ित होते हैं, वे आमतौर पर कर्ज के दायरे में रहते हैं और तमाम प्रयासों के बावजूद अपने कर्ज को नहीं चुका पाते हैं।
- बीमारी से पीड़ित परिवार जिसके कारण उस परिवार को वित्तीय समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
- पति-पत्नी विवाद

पितृ दोष निवारण उपाय

- पितृ दोष को दूर करने के लिए हमें उचित पितृ दोष निवारण की आवश्यकता है यदि कोई व्यक्ति इससे पीड़ित है तो इससे छुटकारा पाने के लिए, उसे किसी पितृ पक्ष पर श्राद्व करना चाहिए।
- गाय के लिए पहली रोटी बनाएं। इसके अलावा घर में हमेशा पीने का साफ पानी रखें। इसे पिताओं का स्थान माना जाता है।
- आशीर्वाद पाने के लिए ग्रहण के समय पशुओं को भोजन दान करें।
- इससे सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त करने के लिए, भगवद गीता को रोजाना सुबह और शाम पढ़ें, जो पितृ दोष को दूर करने के लिए उपयोगी होगा।
- अपने कार्यों को यथासंभव शुद्व रखने की कोशिश करें, किसी भी मामले में जल्दबाजी न करें।

नवरात्रों का वैज्ञानिक महत्त्व



भारतीय अवधारणा में हिरण्यगर्भ जिसे पाश्चात्य विज्ञान बिग बैंग के रूप में देखता है, से अस्तित्व में आए इस दृष्यादृष्य जगत के सभी प्रपंच चाहे वह जड़ हों या चेतन, सभी निर्विवाद रूप से शक्ति के ही परिणाम हैं। हम सभी का श्वांस-प्रश्वांस प्रणाली, रक्त संचार, हृदय की धड़कन, नाड़ी गति, शरीर संचालन, सोचना समझना, सभी कुछ शक्ति के द्वारा ही संभव होता है। जो कुछ भी पदार्थ के रूप में हैं, उनके साथ-साथ हम सभी पंचतत्वों यानी क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा से बने हैं। उदाहरण के लिए जल में द्रव यानी गीला करने की शक्ति है, अग्नि में दाह यानी जलाने की शक्ति है, वायु में स्पर्श की शक्ति है, मिट्टी में गंध की शक्ति है और आकाश में शब्द की शक्ति है। प्रकाश और ध्वनि में तरंग की शक्ति है। सृष्टि में सृजन की शक्ति है और प्रलय में विसर्जन की शक्ति है। प्राण में जीवन शक्ति है।

आईंस्टीन का इनर्जी-मैटर समीकरण ई = एमसी2 के अनुसार भी संसार के सभी द्रव्य ऊर्जा की संहति के ही परिणाम हैं। यहाँ तक कि पदार्थों का स्वरूप परिवर्तन भी ऊर्जा की विभिन्न गत्यात्मकता से ही संभव होता है। इन सभी क्रियाओं से ऊर्जा न तो खर्च होती है और न ही उसका ह्रास होता है, वह सदैव विद्यमान रहती है। यह सनातन है, यह अक्षत है। इसे न तो पैदा किया जा सकता है और न ही समाप्त किया जा सकता है। हमें जो जड़ प्रतीत होता है, वह भी ऊर्जा के प्रभाव से अपने नाभी की परिधि में विविध वेग से गतिमान है। इन अणुओं का स्वरूप भी प्लाज्मा, क्वार्ट्ज, पार्टिकल्स यानी कणों के गतिक्रम के अनुरूप ही अस्तित्व में आते हैं। यानी गत्यात्मकताओं के इन्हीं आधारों पर ही अणु-परमाणु आदि सूक्ष्म तत्व आपसी संयोजन करके सूर्य, चंद्र तथा पृथ्वी जैसे विशाल पिंडों में परिवर्तित होकर आकाश में विचरण करने लगते हैं। ब्रह्मांड में सभी कुछ गतिमान है, स्थिर कुछ भी नहीं। अनंत ब्रह्मांडों वाली ये श्रृंखलाएं प्रकृति के प्रगट स्वरूप के चार प्रतिशत के क्षेत्र में हैं, 76 प्रतिशत क्षेत्र डार्क इनर्जी का है और 21 प्रतिशत क्षेत्र डार्क मैटर का है।



इसे ऋग्वेद में कहा गया है आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यण्च। हिरण्ययेन सविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन।। यह नक्षत्रों से परिपूर्ण ब्रह्मांड की ये अनंत श्रृंखलाएं किसी बल विशेष के प्रभाव से ही निरंतर गतिशील बनी हुई हैं। यह सर्वविदित है कि किसी भी प्रकार की गतिशीलता के लिए एक स्थिर आधार की आवश्यकता होती है। हम यदि चल पाते हैं तो इसलिए कि हमारी तुलना में पृथ्वी स्थिर है। इसी प्रकार सृष्टि की गतिशीलता जिस आधार पर क्रियाशील है, उसे ही ऋषियों ने निष्कलंक, निष्क्रिय, शांत, निरंजन, निगूढ़ कहा है। इस अपरिमेय निरंजन निगूढ़ सत्ता में चेतना के प्रभाव से कामना का भाव जागृत होता है, तब उसे साकार करने के लिए मातृत्व गुणों से परिपूर्ण चिन्मयी शक्ति का प्राकट्य होता है। इस तरह आदि शक्ति के तीन स्वरूपों ज्ञान शक्ति, इच्छा शक्ति और क्रिया शक्ति के उपक्रमों से प्रकृति के सत्व, रज और तम तीन गुणों की उत्पत्ति होती है। इन्हें ही

अतिशय शुद्धता की स्थिति में कोई भी निर्माण नहीं हो सकता। जैसे कि 24 कैरेट शुद्ध सोने से आभूषण नहीं बनता, इसके लिए उसमें तांबा या चांदी का मिश्रण करना होता है। इसी प्रकार साम्यावस्था में प्रकृति से सृष्टि से संभव नहीं है। उसकी साम्यावस्था को भंग होकर आपसी मिश्रणों के परिणामस्वरूप उत्पन्न विकृतियों से ही सृष्टि की आकृतियां बनने लगती हैं। इसको ही सांख्य में कहा है झ्र रागविराग योगः सृष्टि। प्रकृति, विकृति और आकृति ये तीन का क्रम होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि आदि शक्ति के तीनों रूपों, उनके तीनों गुणों और तीन क्रियात्मक वेगों के परस्पर संघात से समस्त सृष्टि होती है। तीन का तीन में संघात होने से नौ का यौगिक बन जाता है। यही सृष्टि का पहला गर्भ होता है।



उनकी आभा के अनुसार श्वेत, रक्तिम और कृष्ण कहा गया है।

अतिशय शुद्धता की स्थिति में कोई भी निर्माण नहीं हो सकता। जैसे कि 24 कैरेट शुद्ध सोने से आभूषण नहीं बनता, इसके लिए उसमें तांबा या चांदी का मिश्रण करना होता है। इसी प्रकार साम्यावस्था में प्रकृति से सृष्टि से संभव नहीं है। उसकी साम्यावस्था को भंग होकर आपसी मिश्रणों के परिणामस्वरूप उत्पन्न विकृतियों से ही सृष्टि की आकृतियां बनने लगती हैं। इसको ही सांख्य में कहा है रागविराग योगः सृष्टि। प्रकृति, विकृति और आकृति ये तीन का क्रम होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि आदि शक्ति के तीनों रूपों, उनके तीनों गुणों और तीन क्रियात्मक वेगों के परस्पर संघात से समस्त सृष्टि होती है। तीन का तीन में संघात होने से नौ का यौगिक बन जाता है। यही सृष्टि का पहला गर्भ होता है। पदार्थों में निविष्ट इन गुणों को आज का विज्ञान न्यूट्रल, पॉजिटिव और निगेटिव गुणों के रूप में व्याख्यायित करता है। इन गुणों का आपसी गुणों के समिश्रण से उत्पन्न बल के कारण इषत, स्पंदन तथा चलन नामक तीन प्रारंभिक स्वर उभरते हैं। ये गति के तीन रूप हैं। आधुनिक विज्ञान इन्हें ही, इक्वीलीबिरियम यानी संतुलन, पोटेंशियल यानी स्थिज और काइनेटिक यानी गतिज के नाम से गति या ऊर्जा के तीन मूल स्तरों के रूप में परिभाषित करता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि आदि शक्ति के तीन रूप, तीन गुण और उनकी तीन क्रियात्मक वेग, इन सभी का योग नौ होता है।



जैसा कि हम देखते और जानते हैं कि जैविक सृष्टि का जन्म मादा के ही कोख से होता है। अतः मूल प्रकृति और उससे प्रसूत त्रिगुणात्मक आधारों जिसके कारण सृष्टि अस्तित्व में आती है, को हमारे मनीषियों ने नारी के रूप में ही स्वीकार किया। इसलिए पौराणिक आख्यानों में शक्ति के क्रियात्मक मूल स्वरूपों को ही सरस्वती, लक्ष्मी और दूर्गा के मानवीय रूपों के माध्यम से उनके गुणों और क्रिया सहित व्यक्त करने का प्रयास किया। हम तीन देवों की भी कल्पना करते हैं ब्रह्मा विष्णु और महेश जोकि सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता और संहारकर्ता हैं। लेकिन ये तीनों आधार हैं आधेय नहीं। ये शक्तिमान हैं। इनमें से वह शक्ति निकल जाए तो वे कभी विशिष्ट कामों के पालन में असमर्थ हो जाते हैं। शक्ति ही इनमें व्याप्त देवत्व का आधार है। इसलिए देवताओं की आरतियों के अंत में लिखा होता है जो कोई नर

गावे। कहीं भी नारी नहीं लिखा, क्योंकि नारी देवताओं की स्तुति कैसे करेगी, वह तो स्वयं वंदनीया है, देवताओं की भी स्तुत्य है।

समाज के सभी जैवसंबंध स्त्रियों पर ही टिका है। रिश्तों का सारा फैलाव, घर-परिवार की सारी संकल्पना स्त्रियों के कारण ही अस्तित्व में आती है। लेकिन पश्चिम की मानसिकता के भ्रमजाल के कारण स्वयं को केवल आधी आबादी मानने लगी हैं और पुरुषों से प्रतिद्वन्द्विता के चक्कर में पड़ गई हैं। नारी की पुरुष से प्रतिद्वन्द्विता कैसे संभव है, वह तो पुरुष को जन्म देती हैं। वह आधी आबादी नहीं है, वह तो इस समस्त आबादी की जन्मदात्री है। इसलिए माता होना नारी की सार्थकता है और माँ कहलाना उसका सर्वोच्च संबोधन है। बंगाल में हम छोटी-छोटी बच्चियों को भी माँ कह कर बुलाते हैं। हरेक संबंध में माँ लगा कर संबोधित करते हैं, जैसे पीसीमाँ, मासीमाँ, बऊमाँ आदि। इसलिए ऋग्वेद में यह निर्देश पाया जाता है कि श्वसुर बहु को आशीर्वाद दे कि वह दस पुत्रों की माता बने और पति तुम्हारा ग्यारहवाँ पुत्र हो जाए। यह वास्तविकता भी है। विवाह नया हो तो बात अलग होती है, परंतु संतानों के जन्म के बाद स्त्री का ध्यान पति की बजाय संतानों की ओर अधिक होता है और जैसे-जैसे आयु बढ़ती जाती है, स्त्री संतान की भांति ही पति की भी वात्सल्यजनित



चिंता करने लगती है।

आदिशक्ति को जगज्जननी क्यों कहा गया, इसे हम ईशावास्योपनिषद के एक मंत्र से मिलता है। पहले मैं यह बता दूँ कि चूंकि वैदिक संकल्पना में ईश्वर अकल्पनीय, निराकार, निगूढ़ है, इसलिए उसकी कोई मूर्ति नहीं हो सकती, उसका आकार नहीं हो सकता। यदि कोई आकार होगा भी तो वह मनुष्य के समझ से परे होगा। हम मन, बुद्धि, कल्पना और ज्ञान के आधार पर सोचते हैं। परंतु ईश्वर तो इन सब से परे है। इसलिए हम उसकी आकृति नहीं गढ़ सकते। यजुर्वेद कहता है कि न तस्य प्रतिमा अस्ति। यह हमारी भारतीय परंपरा में बौद्धों के काल से पूर्व तक जीवंत रहा है। उससे पहले तक हम केवल शिवलिंग, शालीग्राम और पिंडी का पूजन करते थे। देवी के लिए पिंडी, क्योंकि वह गर्भ का स्वरूप है, विष्णु के लिए शालीग्राम, क्योंकि वह आकाशगंगा का स्वरूप है और शिव के लिंग, क्योंकि शिव अग्निसोमात्मक है तो दीपक के लौ के भांति लिंग। दीपक में लौ अग्नि है और तेल सोम। बुद्ध के बाद बौद्धों के तर्ज पर मूर्तियां गढ़ी गई।



ईशावास्योपनिषद में कहा है पूर्णमिदः। इसका अर्थ है कि वह भी पूर्ण है और यह जगत भी पूर्ण है। पूर्ण से पूर्ण प्रकट होता है और फिर भी पूर्ण शेष बच जाता है। पूर्ण से पूर्ण निकल जाए, फिर भी पूर्ण शेष बचे, वही ईश्वर है। यदि नौ पूर्णांक में से नौ पूर्णांक निकल जाए तो शून्य बचना चाहिए, परंतु ऋषि कहता है कि उसमें शून्य नहीं, नौ ही बचेगा। यह एक विशेष घटना है। यह भौतिक स्तर पर संसार में कहीं नहीं घटती है, इसका केवल एक अपवाद है। एक स्त्री गर्भ धारण करती है, संतान को जन्म देती है। जन्म लेने वाली संतान पूर्ण होती है और माँ भी पूर्ण शेष रहती है। इसलिए माँ ईश्वर का ही रूप है। संसार की सभी मादाएं ईश्वर का ही स्वरूप हैं। इसलिए हमने प्रकृति की कारणस्वरूपा त्रयात्मक शक्ति और फिर उसके त्रिगुणात्मक प्रभाव से उत्पन्न प्राकृतिक शक्ति के नौ स्वरूपों को जगज्जननी के श्रद्धात्मक भावों में ही अंगीकार किया।

फिर दुर्गा के नौ स्वरूपों में प्रकृति के त्रिगुणात्मक शक्ति को देखा। वे हैं शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायिनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री। ये नौ दुगाएं काल और समय के आयाम में नहीं हैं, उससे परे हैं।

माँ दुर्गा की आठ मुख्य शक्तियां



ऋषिराज तिवारी
धर्मगुरू एवं कथावाचक



वैसे तो माता दुर्गा की शक्ति की कोई सीमा नहीं है किन्तु देवी भागवत में उनकी मुख्य 8 शक्तियों के बारे में बताया गया है जो स्वयं परमपिता ब्रह्मा द्वारा वर्णित है। माता की आठ भुजाएं उनकी इन्ही आठ शक्तियों का प्रतीक हैं। भगवान विष्णु की भांति माँ दुर्गा भी सभी सोलह कलाओं से परिपूर्ण हैं।

शरीर बल: शरीर बल अर्थात शारीरिक अथवा बाहुबल। इसके विषय में बताने की कोई आवश्यकता नहीं है कि माता का बाहुबल कितना था। जिनका प्राकट्य स्वयं त्रिदेवों की सम्मलित शक्ति से हुआ हो उनकी शक्ति की भला क्या सीमा? अपने बाहुबल से माता ने महिषासुर, चण्ड-मुण्ड, रक्तबीज एवं शुम्भ-निशुम्भ महाशक्तिशाली दैत्यों का वध किया। धूम्रलोचन के ६०००० दुर्धुष योद्धाओं की सेना को तो माता ने केवल अपने एक हुंकार से भस्म कर दिया था।

विद्या बल: माता सरस्वती की भांति माँ दुर्गा भी समस्त विद्याओं की अधिष्ठात्री है। विद्या, अर्थ संसार में जो भी ज्ञान है वो माता में ही समाहित है और उन्ही से उनका संचार समस्त जगत में होता है। जितने प्रकार की भी दैवीय शक्तियां और सिद्धियां हैं वो सभी माता दुर्गा के आधीन हैं।

चातुर्य बल: जहाँ शक्ति की सीमा समाप्त होती है वहां से बुद्धि की सीमा आरम्भ होती है। बुद्धि के बल पर बड़े से बड़े योद्धाओं को परास्त किया जा सकता है। विद्या की भांति ही माँ दुर्गा बुद्धि का मूल भी है। शुम्भ-निशुम्भ की सेना का नाश करने हेतु माता ने चण्ड-मुण्ड को अपनी बुद्धि बल से ही वापस भेजा जिसके बाद वे बड़ी सेना लेकर आये और उन सब का माता के हाथों ह्रास हुआ।

धन बल: माँ दुर्गा धन की देवी लक्ष्मी का ही एक रूप है। धनकुबेर तो स्वयं माता के परम भक्त हैं। संसार का समस्त ऐश्वर्य माता को ही सुशोभित है। जब माँ की कृपा अपने भक्तों पर होती है तो वे उन्हें धन-धान्य से परिपूर्ण कर देती हैं।

शस्त्र बल: संसार का भला ऐसे कौन से अस्त्र-शस्त्र हैं जिनका ज्ञान माँ दुर्गा को नहीं है? जब त्रिदेवों से माता का प्राकट्य हुआ तो त्रिदेवों के आयुधों के साथ-साथ सभी देवी-देवताओं ने अपने-अपने आयुध भी माता को दिए जिससे माँ दुर्गा संसार से दुष्टों का नाश कर सके। संसार के जितनी भी शक्तियां और दिव्यास्त्र हैं उनका ज्ञान माता को है।

शौर्य बल: शक्ति जब अपनी अधिकतम सीमा पर पहुँच जाती है तो शौर्य में परिणत हो जाती है। माँ दुर्गा भी शक्ति की पराकाष्ठा हैं। युद्धक्षेत्र में माता के तेज और शौर्य की समता किसी और से नहीं की जा सकती। महाभारत में युद्ध से एक दिन पहले श्रीकृष्ण ने अर्जुन को माता का आशीर्वाद प्राप्त करने को कहा था ताकि उनकी विजय में कोई शंका ना रह जाये। स्वयं महादेव के पुत्र और देवों के सेनापति स्कन्द भी युद्ध से पूर्व माँ दुर्गा की ही आराधना करते हैं।

मनोबल: शक्ति, शौर्य और शस्त्रों को मन ही नियंत्रित कर सकता है। मनोबल का अर्थ है कि अपनी सभी इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण रखते हुए बाह्य माया के प्रभाव से अछूता रहना। माँ स्वयं माया की जननी है फिर संसार की माया का उनपर किस प्रकार प्रभाव पड़ सकता है? माँ दुर्गा का मनोबल समस्त जगत की चेतना का मूल स्रोत है।



विश्वास का पहला नाम - काजल यूनिक जेम्स



काजल यूनिक जेम्स के संस्थापक श्री राजेन्द्र सिंगला का कहना है कि रत्न प्रकृति का मानव जाति के लिए एक अनमोल उपहार हैं। प्रकृति लाखों वर्षों तक अपने गर्भ में विशेष परिस्थितियों—अत्यधिक तापमान और दबाव—में इन्हें तैयार करती है, जिसके कारण रत्नों में विशिष्ट गुण विकसित होते हैं। इन्हीं गुणों के कारण रत्नों का मानव जीवन पर सकारात्मक प्रभाव माना जाता है।

हमारे ऋषि-मुनियों एवं ज्योतिषाचार्यों ने प्राचीन काल से ही रत्नों के महत्व, उनके प्रभाव तथा लाभों का उल्लेख अनेक ज्योतिष ग्रंथों में किया है। विभिन्न रत्नों के रंग और गुण उनमें उपस्थित प्राकृतिक खनिज एवं रासायनिक तत्वों के कारण भिन्न-भिन्न होते हैं। उदाहरण के लिए, हीरा मुख्यतः कार्बन से निर्मित होता है, जबकि अन्य रत्नों में अलग-अलग खनिज तत्व उनकी विशेषताओं को निर्धारित करते हैं।

काजल यूनिक जेम्स में उच्च गुणवत्ता वाले, लैब-प्रमाणित एवं पूर्णतः प्राकृतिक रत्न उपलब्ध कराए जाते हैं। इसके साथ ही यहाँ प्रमाणिक एवं ओरिजिनल रुद्राक्ष भी उचित मूल्य पर उपलब्ध हैं। ग्राहकों का वर्षों से मिला विश्वास ही हमारी सबसे बड़ी पूंजी है। हमारा उद्देश्य हमेशा से यही रहा है कि प्रत्येक व्यक्ति तक उचित मूल्य में उच्च गुणवत्ता वाले रत्न एवं रुद्राक्ष पहुँचाए जाएँ।

आज के समय में मनुष्य अनेक प्रकार की मानसिक, पारिवारिक, आर्थिक एवं व्यावसायिक समस्याओं का सामना कर रहा है। वैदिक ज्योतिष एवं शास्त्रों में इन समस्याओं के समाधान हेतु ग्रह रत्न एवं रुद्राक्ष धारण करने का विशेष महत्व बताया गया है। उचित सलाह के अनुसार धारण किए गए रत्न एवं रुद्राक्ष व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक ऊर्जा, आत्मविश्वास और मानसिक शांति प्रदान करने में सहायक माने जाते हैं।

विशेष रूप से श्रावण मास भगवान शिव की आराधना का पावन समय माना जाता है। इस शुभ अवसर पर अपनी राशि एवं आवश्यकता के अनुसार उपयुक्त रत्न और रुद्राक्ष धारण कर आप भगवान शिव की कृपा एवं सकारात्मक ऊर्जा का लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

काजल यूनिक जेम्स : विश्वास, गुणवत्ता और प्रमाणिकता का प्रतीक।

संपर्क सूत्र- मयंक जी, मो.- 9310311193

राजेन्द्र सिंगला-962511414119





महालयाः माँ दुर्गा के आगमन का पावन पर्व



मधुसूदन शर्मा



महालया उत्तर भारत, विशेष कर बंगाल का एक अति महत्वपूर्ण पर्व है। ये एक संस्कृत शब्द है जो महा+आलय से मिलकर बना है, जिसका अर्थ होता है महान आवास। ये पर्व हर पितृ पक्ष समाप्त होने के अगली अमास्या को पड़ता है और इसी दिन के साथ दुर्गा पूजा एवं नवरात्रि का आरम्भ माना जाता है। महालया के अगले दिन ही नवदुर्गा के पहले रूप माता शैलपुत्री की पूजा की जाती है।

ऐसी मान्यता है कि इसी दिन माँ दुर्गा कैलाश छोड़ कर 10 दिनों के लिए पृथ्वी पर आती हैं और समस्त बुरी शक्तियों से जगत, विशेषकर बच्चों की रक्षा करती है। ये पर्व अधिकतर बंगाल में मनाया जाता है और माता से आज के दिन पृथ्वी पर अवतरित होने की प्रार्थना की जाती है ताकि वे महिषासुर का वध कर सके। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार जब पृथ्वी महिषासुर के अत्याचारों से त्रस्त हो चुकी थी तब उसके नाश लिए आज के दिन ही माँ दुर्गा का प्राकट्य हुआ।

महालया से 6 दिन बाद, अर्थात षष्ठी से दुर्गा पूजा का वास्तविक आरम्भ माना जाता है। मेलों एवं अनुष्ठानों का आरम्भ षष्ठी से ही होता है। महालया के दिन सभी लोग प्रातः उठ कर सर्वप्रथम अपने पितरों को याद करते हैं और उनका धन्यवाद अदा करते हैं। इसी के साथ वे अपने पितरों से ये प्रार्थना करते हैं कि वे अब वापस अपने लोक में लौट जाएँ। बाद में देवी की महामाया मूर्ति की पूजा होती है और कई प्रकार के भोग लगाए जाते हैं। इस दिन ब्राह्मणों को भोज कराने का भी विशेष महत्त्व है।

माँ दुर्गा की मूर्ति में उनकी जीवंत आँखों का बहुत महत्त्व होता है और महालया के दिन ही मूर्तिकार माता के मूर्ति की आँखों का निर्माण करते हैं। महालया के दिन माता के नेत्र की रचना करने की ये परंपरा सदियों पुरानी है। अधिकतर कलाकार आज माता के तीसरे नेत्र को सबसे बनाते हैं और फिर अन्य दो नेत्रों का निर्माण किया जाता है। दुर्गा मूर्ति की आँखों के निर्माण के बाद ही उस मूर्ति को पूर्ण रूप दिया जाता है। इसके बाद ही ये मूर्तियाँ पूजा पंडालों की शोभा बढाती है।

महालया का दिन मुख्यतः दो भागों में बंटा होता है। आधा दिन पितरों को विदाई देने और फिर आधा दिन माँ दुर्गा के आगमन का होता है। दोपहर तक सभी लोग पूजा अनुष्ठान द्वारा अपने पितरों को भोग लगाते हैं। फिर उस भोग के पांच भाग कर एक देवताओं को, दूसरा गाय को, तीसरा कौवे को, चौथा श्वान (कुत्ते) को और पांचवा चीटियों को अर्पित किया जाता है। इसके बाद लोग अपने पितरों को अंतिम बार जल पिला कर उनसे वापस अपने लोक लौट जाने की प्रार्थना करते हैं।



इसके बाद शाम से महालया का दूसरा भाग आरम्भ होता है जब सभी स्नानादि से निवृत हो, नए वस्त्र पहन कर माँ दुर्गा के धरती पर आगमन के स्वागत के लिए तैयार हो जाते हैं। ऐसी मान्यता है कि संध्या पूजा के बाद भक्तों के आह्वान पर माँ दुर्गा कैलाश पर भगवान शंकर से आज्ञा लेकर अगले 10 दिनों तक पृथ्वी पर रहने आती है। नवरात्रि के बाद 10वें दिन माता के विसर्जन के बाद वो पुनः पृथ्वी छोड़ कैलाश को लौट जाती हैं।

महालया को एक स्त्री के ससुराल से अपने पीहर आने के रूप में भी देखा जाता है। बंगाल में विवाहित स्त्रियों का महालया के दिन अपने मायके जाने की भी परंपरा है जहाँ उन्हें माता का रूप ही मान कर उनका स्वागत किया जाता है। बंगाल में इसे एक उत्सव के रूप में देखा जाता है ।

एक मान्यता के अनुसार महालया को भारत में फसलों के पकने के दिन के रूप में भी देखा जाता है। इसीलिए किसान आज के दिन अपने फसलों का पहला भाग देवताओं को समर्पित करते हैं। देवताओं के अतिरिक्त अपने पितरों को भी अन्न एक पिंड के रूप में अर्पण करने की परंपरा रही है। इसके बाद ही दुर्गा पूजा और अन्य पर्वों का शुभारम्भ किया जाता है। महालया, नवरात्रि एवं दुर्गा पूजा महिला सशक्तिकरण का एक उत्तम उदाहरण है। सभी पुरुष (देवता) महिषासुर को परास्त करने में असफल हो गए तब त्रिदेवों में स्त्री शक्ति के महत्त्व के प्रतीक में अपने-अपने तेज से माँ दुर्गा का आह्वान किया। त्रिदेवों के साथ सभी देवताओं ने अपने-अपने अस्त्र-शस्त्र उन्हें प्रदान किये जिसके द्वारा माता ने 9 दिनों तक युद्ध करने के बाद 10वें दिन महिषासुर का वध कर दिया। तो ये पर्व वास्तव में एक स्त्री में सभी पुरुषों की सम्मलित शक्ति का प्रतीक है।

साधना, शक्ति और आत्म जागरण का पर्व



पूज्य हरिवंश जी महाराज



नवरात्रि पर्व के नौ दिनों के दौरान आदिशक्ति जगदम्बा के नौ विभिन्न रूपों की आराधना की जाती है। ये नौ दिन वर्ष के सर्वाधिक पवित्र दिवस माने गए हैं। इन नौ दिनों का भारतीय धर्म एवं दर्शन में ऐतिहासिक महत्व है और इन्हीं दिनों में बहुत सी दिव्य घटनाओं के घटने की जानकारी हिन्दू पौराणिक ग्रन्थों में मिलती है। माता के इन नौ रूपों को नवदुर्गा के नाम से भी जाना जाता है जो इस प्रकार हैं -शैलपुत्री, ब्रह्माचारिणी, चन्द्रघन्टा, कूष्माण्डा, स्कन्द माता, कात्यायिनी, कालरात्रि, महागौरी और सिध्दिदात्री।

नवरात्रि से हमें अधर्म पर धर्म और बुराई पर अच्छाई के जीत की सीख मिलती हैं। यह हमें बताती है की इंसान अपने अंदर की मूलभूत अच्छाइयों से नकारात्मकता पर विजय प्राप्ती और स्वयं के अलौकिक स्वरूप से साक्षात्कार कैसे कर सकता है। भारतीय जन-जीवन में धर्म की महत्ता अपरम्पार है। यह भारत की गंगा-जमुना तहजीब का ही नतीजा है कि सब धर्मों को मानने वाले लोग अपने-अपने धर्म को मानते हुए इस देश में भाईचारे की भावना के साथ सदियों से एक साथ रहते चले आ रहे हैं। यही कारण है की पूरे विश्व में भारत की धर्म व संस्कृति सर्वोतम मानी गयी है। विभिन्न धर्मो के साथ जुड़े कई पर्व भी है जिसे भारत के कोने कोने में श्रध्दा, भक्ति और धूमधाम से मनाया जाता है। उन्ही में से एक है नवरात्रि।

नवरात्रि के पहले दिन बालिकाओं की पूजा की जाती है। दूसरे दिन युवती की पूजा की जाती है। तीसरे दिन जो महिला परिपक्वता के चरण में पहुंच गयी है, उसकी पूजा की जाती है। नवरात्रि के चौथे, पांचवें और छठे दिन लक्ष्मी- समृद्धि और शांति की देवी की पूजा करने के लिए समर्पित है। आठवे दिन पर एक यज्ञ किया जाता है। नौवां दिन नवरात्रि समारोह का अंतिम दिन है। यह महानवमी के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन उन नौ जवान लड़कियों की पूजा होती है जो अभी तक यौवन की अवस्था तक नहीं पहुंची है। इन नौ लड़कियों को देवी दुर्गा के नौ रूपों का प्रतीक माना जाता है।



लड़कियों का सम्मान तथा स्वागत करने के लिए उनके पैर धोए जाते हैं। पूजा के अंत में लड़कियों को उपहार के रूप में नए कपड़े, वस्तुयें, फल प्रदान किए जाते हैं।

शक्ति की उपासना का पर्व शारदीय नवरात्र प्रतिपदा से नवमी तक निश्चित नौ तिथि, नौ नक्षत्र, नौ शक्तियों की नवधा भक्ति के साथ सनातन काल से मनाया जा रहा है।

आदिशक्ति के हर रूप की नवरात्र के नौ दिनों में क्रमशः अलग-अलग पूजा की जाती है। मां दुर्गा की नौवीं शक्ति का नाम सिद्धिदात्री है। ये सभी प्रकार की सिद्धियां देने वाली हैं। इनका वाहन सिंह है और कमल पुष्प पर ही आसीन होती हैं।

देवताओं को महिषासुर के प्रकोप से पृथ्वी पर विचरण करना पड़ रहा था तब महिषासुर के इस दुस्साहस से क्रोधित होकर देवताओं ने देवी दुर्गा की रचना की।

ऐसा माना जाता है कि देवी दुर्गा के निर्माण में सारे देवताओं का एक समान बल लगाया गया था। महिषासुर का नाश करने के लिए सभी देवताओं ने अपने अपने अस्त्र देवी दुर्गा को दिए थे और कहा जाता है कि इन देवताओं के सम्मिलित प्रयास से देवी दुर्गा और बलवान हो गई थी। इन नौ दिन देवी-महिषासुर संग्राम हुआ और अन्ततः महिषासुर-वध कर महिषासुर मर्दिनी कहलायीं।

Shri Sandya Gayatri Karyalay

Religious Product Manufacturers & Suppliers

Panchdhatu, Copper, Brass, Parad, Sfatic, Meru Sikhar Yantra, Vastu Piramid, Fangsui, Reiki Article Etc

For online orders from anywhere All India, please contact us.

Vijay Shah, Mobile : 9825023848, 9825523848

Pujan Arti



Available Different Size & Design

CNC Meru Shri Yantra Gold Plated Effect



Size : 5x5
Manufacturing : Panchdhatu (Brass)

Tortoise Meru Shree Yantra



Size : 1.5x1.5, 3x3, 5x5
Manufacturing : Casting Metal



Available in 36 more types of pyra cards

Acrylic Laminated Yantra - Gold Plated Effect



Manufacturing : Gold Plated Effect

Bajath Yantra



Size : Small, Medium, Large
Manufacturing : Brass

Shree Yantra Pendal



Lesser Cutting
Mac : Brass

Metal Frame Yantra



Evil Eye Hanging



Vastu Hanging



Different Type Of Gaumukhi



Different Type Of Puja Article



Laughing Buddha - Colour



Size : Small To Big - 24 Inch

Diamond Finish Small Murti



Charan Paduka With Plate





9,000+ प्रोडक्ट्स की विशाल रेंज

क्रिस्टल होलसेल

पूजा यंत्र होलसेल

नग-नगीने एवं रत्नों के सभी आइटम उपलब्ध

Vijay Shah

देश के किसी भी हिस्से से ऑनलाइन ऑर्डर देने के लिए संपर्क करें।

9825023848
9825523848

नवदुर्गा का रहस्य: हर स्वरूप में छिपा है जीवन का मार्गदर्शन



एस्ट्रो अरुण अग्रवाल
वैदिक ज्योतिषाचार्य एवं वास्तुविद
मो. 9990844047



नवरात्रि हिंदू धर्म का महत्वपूर्ण पर्व माना जाता है। नवरात्रि में मां दुर्गा के 9 अलग-अलग स्वरूपों की पूजा-उपासना की जाती है। मां दुर्गा को शक्ति माना जाता है और शक्ति का अर्थ 'ऊर्जा' होता है। देवी दुर्गा अदृश्य ऊर्जा का मूल स्त्रोत हैं और इस सृष्टि को बनाए रखती हैं। इस शक्ति को नवदुर्गा के रूप में भी जाना जाता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको मां दुर्गा के 9 स्वरूपों के बारे में बताने जा रहे हैं और हर रूप का अर्थ और गुण भी जानेंगे।

मां शैलपुत्री

देवी दुर्गा का पहला स्वरूप मां शैलपुत्री हैं। शैल का अर्थ शिखर से होता है। जोकि असाधारण है और ऊंचाइयों तक पहुंचने के लिए बढ़ रहा है। मां शैलपुत्री पहाड़ों की ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करती हैं और वह सूक्ष्म ऊर्जा हैं, जिससे संपूर्ण ब्रह्मांड उत्पन्न होता है। आध्यात्मिक रूप से जब भी हम खुद को जुड़ा हुआ महसूस करते हैं, तो हमारे अंदर यह चेतना शैलपुत्री के रूप में परिलक्षित होती है।

मां ब्रह्मचारिणी

देवी दुर्गा का दूसरा स्वरूप ब्रह्मचारिणी है। ब्रह्म का अर्थ अनंत से होता है। आप सोचकर देखें यदि यह अनंत है, तो फिर गति का क्या मतलब है। यह हर जगह है और यहां कहां जा सकता है। ब्रह्मचारिणी का एक अर्थ अनंत के भीतर की गति है, दूसरी ऊर्जा शुद्ध और अछूता पहलू है। यह सूर्य की किरणों की तरह प्राचीन फिर हमेशा ताजा और नया। यह नयापन दुर्गा के दूसरे रूप में समाहित है।

मां चंद्रघंटा

चंद्र का अर्थ होता है चांद या फिर मन से संबंधित। जो मन को मोहित कर ले। चंद्रमा सुंदरता की प्रतिमूर्ति है। जहां भी कोई चीज आपको सुंदर लगती है, वह देवी मां की ऊर्जा की वजह होती है।

अगर ऊर्जा नहीं है, तो कुछ भी सुंदर नहीं लगता है। फिर चाहे चेहरा कितना सुंदर क्यों न हो और अगर उसमें जान नहीं है, तो उसको सुंदर नहीं कहा जा सकता है। जैसे कि हम मृत शरीर में सुंदरता नहीं देखते हैं, क्योंकि उसमे किसी तरह की ऊर्जा नहीं होती है। प्राणी मात्र में यह ऊर्जा ही सुंदरता लाती है।



मां कुष्मांडा

मां दुर्गा का चौथा स्वरूप मां कूष्मांडा है। यह प्राण ऊर्जा है, वह चेतना जो सबसे छोटे जगत से लेकर विशाल ब्रह्मांड तक फैली हुई है। यह निराकार है। इसके बाद भी यह सभी कल्पनीय रूपों को जन्म देती है। जब भी हम ऊर्जा या प्राण के पुंज का अनुभव करते हैं, तो यह देवी मां का

एक पहलू है।

मां स्कंदमाता

देवी दुर्गा का पाँचवां स्वरूप स्कंदमाता है। यह पूरे ब्रह्मांड की रक्षा की प्रतीक मानी जाती है। जो हमारी चेतना में वास करती हैं और सभी ज्ञान की प्रणालियों की जननी भी हैं।

मां कात्यायनी

मां दुर्गा का छठा स्वरूप मां कात्यायनी है। यह चेतना के पहलू से उत्पन्न होने वाली ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करती हैं। जब हम यह समझ जाते हैं, 'मैं न तो शरीर हूं और न ही मन हूं' और अपने भीतर की गहराई में उतरते हैं। तो आप हर चीज के द्रष्टा बन जाते हैं। कात्यायनी का सार है, 'इंद्रियों से परे देखना' और 'तर्क से परे जानना' है।

मां कालरात्रि

मां दुर्गा का सातवां स्वरूप मां कालरात्रि हैं। जोकि गहरी, अंधकारमय ऊर्जा का प्रतीक हैं। एक ऐसा अंधकारमय पदार्थ जो अनंत ब्रह्मांडों को धारण कर सकता है। जब हम खुश या सहज महसूस करते हैं, तो यह मां कालरात्रि का आशीर्वाद होता है। कालरात्रि देवी मां का वह स्वरूप है, जो ब्रह्मांड से परे मौजूद है। यह हर आत्मा और दिल को आराम देता है।

मां महागौरी

देवी दुर्गा का आठवां स्वरूप मां महागौरी हैं। यह अनुग्रह, शक्ति और सुंदरता का प्रतीक है। जो आपको मुक्ति और परम स्वतंत्रता का प्रतीक होती है। गौरी का अर्थ है, जो ज्ञान प्रदान करती हैं, जीवन में गति लाने का काम करती हैं और मुक्त करती हैं।

मां सिद्धदात्री

मां दुर्गा का नौवां स्वरूप मां सिद्धदात्री हैं। यह देवी मां हमारे जीवन में चमत्कार प्रकट करती हैं, असंभव को भी संभव बना देती हैं। मां सिद्धदात्री हमें सीमाओं से परे सोचने, तार्किक दिमाग से परे जाने और स्थान की सीमाओं से परे देखने की अनुमति देती हैं। मां सिद्धदात्री हमारे प्रयासों का फल प्रदान करती हैं।

माँ कल्याणी सेवाश्रम की शुद्ध धूनी

घर-घर में सुख-शांति का संदेश



आज के व्यस्त और तनावभरे जीवन में घर-परिवार में बार-बार होने वाली कलह-क्लेश, छोटी-छोटी बातों पर मनमुटाव, बच्चों का पढ़ाई में मन न लगना और बनते-बनते कामों का बिगड़ जाना — ये समस्याएँ प्रायः घर में व्याप्त नकारात्मक ऊर्जा का ही परिणाम मानी जाती हैं। ऐसे में माँ कल्याणी सेवाश्रम की शुद्ध धूनी एक सरल किंतु प्रभावी उपाय के रूप में सामने आती है। पूर्णतः वैदिक जड़ी-बूटियों से निर्मित और शास्त्रसम्मत मंत्रों से सिद्ध यह धूनी घर के वातावरण से नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर सुख, शांति, समृद्धि और सकारात्मकता का संचार करने में सहायक मानी जाती है। रोजाना अथवा विशेष अवसरों पर इस धूनी का प्रयोग कर परिवारजन मानसिक सुकून और गृह-शांति का अनुभव कर सकते हैं। एक बार इसे अपनाकर इसका फर्क स्वयं महसूस किया जा सकता है।

माँ कल्याणी सेवाश्रम की यह पवित्र पहल होम डिलीवरी सुविधा के साथ भी उपलब्ध है — जिज्ञासु पाठक संपर्क नंबर 99908 44047 पर संपर्क कर सकते हैं।



शारदीय नवरात्रि: शक्ति आराधना, कन्या पूजन और जीवन में सकारात्मकता के पारंपरिक उपाय



कीर्ति वर्मा
टैरो कार्ड रीडर
न्यूमरोलॉजिस्ट, रेकी हीलर
मो: 9315157472



हिंदू धर्म में शारदीय नवरात्रि का विशेष आध्यात्मिक और धार्मिक महत्व माना गया है। आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से शुरू होने वाले नौ दिनों में मां दुर्गा के नौ स्वरूपों की विधि-विधान से पूजा की जाती है। मान्यता है कि नवरात्रि के नौ दिन साधना, संयम, जप, व्रत और देवी आराधना के लिए अत्यंत शुभ होते हैं।

शारदीय नवरात्रि में मां दुर्गा के शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री स्वरूपों की पूजा की जाती है। प्रत्येक स्वरूप शक्ति के अलग-अलग पक्ष का प्रतीक माना जाता है।

धार्मिक परंपराओं में नवरात्रि को केवल बाहरी पूजा का पर्व नहीं, बल्कि अपने भीतर की नकारात्मकता, भय, क्रोध और असंतुलन को दूर कर आत्मबल और सकारात्मकता बढ़ाने का अवसर भी माना गया है।

कन्या पूजन का विशेष महत्व

नवरात्रि के दौरान कन्या पूजन की परंपरा विशेष रूप से अष्टमी और नवमी तिथि से जुड़ी हुई है। कई परिवारों में अष्टमी, नवमी या दोनों दिन कन्याओं को घर बुलाकर उनका पूजन एवं भोजन कराया जाता है।

धार्मिक मान्यता में छोटी कन्याओं को देवी स्वरूप माना जाता है। कन्या पूजन के माध्यम से स्त्री शक्ति के प्रति सम्मान व्यक्त किया जाता है। कन्याओं के चरण धोना, उन्हें सम्मानपूर्वक आसन देना, भोजन कराना और सामर्थ्य के अनुसार उपहार देना इसी भाव का हिस्सा है।

कन्या पूजन केवल एक धार्मिक कर्मकांड नहीं, बल्कि समाज में बालिकाओं के सम्मान, सुरक्षा और गरिमा का संदेश भी देता है।



अलग-अलग आयु की कन्याओं का पारंपरिक महत्व

परंपराओं और विभिन्न धार्मिक ग्रंथों में कन्याओं की आयु के आधार पर अलग-अलग नाम और प्रतीकात्मक महत्व बताए गए हैं। प्रचलित परंपरा में:

- 2 वर्ष की कन्या - कुमारी: शुद्धता और बाल शक्ति का प्रतीक।
- 3 वर्ष - त्रिमूर्ति: धर्म, अर्थ और काम की संतुलित शक्ति का प्रतीक।
- 4 वर्ष - कल्याणी: मंगल और कल्याण की प्रतीक।
- 5 वर्ष - रोहिणी: स्वास्थ्य, विकास और समृद्धि से जोड़ी जाती हैं।
- 6 वर्ष-कालिका: शक्ति और नकारात्मकता पर विजय का प्रतीक।
- 7 वर्ष-चंडिका: साहस और ऊर्जा का प्रतीक।
- 8 वर्ष - शाम्भवी: आध्यात्मिक शक्ति और कल्याण से संबंधित मानी जाती हैं।
- 9 वर्ष - दुर्गा: शक्ति, संरक्षण और विजय का प्रतीक।
- 10 वर्ष - सुभद्रा: शुभता और मंगल की प्रतीक मानी जाती हैं।



इन आयु-आधारित मान्यताओं में क्षेत्र और परंपरा के अनुसार कुछ अंतर भी मिलते हैं। इसलिए इसे कठोर नियम की बजाय पारंपरिक धार्मिक मान्यता के रूप में समझना उचित है।

कन्याओं को क्या देना चाहिए?

कन्या पूजन में सबसे महत्वपूर्ण है श्रद्धा और सम्मान। भोजन में परिवार की परंपरा के अनुसार हलवा, पूरी, चना, खीर या अन्य सात्विक भोजन कराया जा सकता है।

उपहार में सामर्थ्य के अनुसार—

- फल और मिठाई
- पुस्तक या कॉपी-पेन
- कपड़े
- रुमाल या उपयोगी वस्तुएं
- छोटी पूजा सामग्री
- दक्षिणा दी जा सकती है।

उपहार देते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि बच्ची की उम्र और आवश्यकता के अनुसार उपयोगी वस्तु दी जाए। केवल दिखावे या महंगे उपहार को धार्मिक पुण्य का आधार नहीं माना जाना चाहिए।

क्या नहीं देना चाहिए?

बहुत अधिक दिखावे, अनुपयोगी वस्तुओं या ऐसी चीजों से बचना बेहतर है जो बच्चे के लिए सुरक्षित या उपयुक्त न हों। सबसे महत्वपूर्ण है कि कन्याओं के साथ सम्मानजनक व्यवहार किया जाए और उन्हें केवल पूजा के दिन नहीं, बल्कि सामान्य जीवन में भी समान सम्मान मिले।

कन्या पूजन की सरल विधि

कन्या पूजन के लिए घर की साफ-सफाई करके पूजा स्थान पर मां दुर्गा की विधिवत पूजा करें। इसके बाद कन्याओं को आदरपूर्वक घर बुलाएं।

1. कन्याओं को स्वच्छ स्थान पर आसन दें।
2. उनके चरण श्रद्धापूर्वक धोएं।
3. माथे पर रोली या कुमकुम का तिलक लगाएं।
4. अक्षत और पुष्प अर्पित करें।
5. मां दुर्गा का स्मरण करते हुए सात्विक भोजन कराएं।
6. भोजन के बाद फल, मिठाई और सामर्थ्य के अनुसार दक्षिणा या उपहार दें।
7. अंत में कन्याओं से आशीर्वाद लेकर उन्हें सम्मानपूर्वक विदा करें।

यदि संभव हो तो कन्या पूजन के साथ एक बालक को भी बटुक रूप में भोजन कराने की परंपरा कई परिवारों में निभाई जाती है।

नवरात्रि में कौन-सी समस्या के लिए क्या साधना?

नवरात्रि में किसी विशेष समस्या के लिए साधना करते समय श्रद्धा, नियमितता और सात्विकता को महत्व दिया जाता है। इसे निश्चित परिणाम की गारंटी की बजाय पारंपरिक आध्यात्मिक उपाय के रूप में देखा जाना चाहिए।

1. मानसिक तनाव और बेचैनी

मां दुर्गा के समक्ष दीपक जलाकर प्रतिदिन कुछ समय शांत बैठें और

ॐ दुं दुर्गायै नमः

मंत्र का जाप करें।

2. भय और असुरक्षा की भावना

मां दुर्गा के रक्षात्मक स्वरूप का स्मरण करते हुए दुर्गा कवच का पाठ किया जा सकता है। नियमित पाठ को परंपरा में सुरक्षा और आत्मबल से जोड़ा गया है।

3. आर्थिक परेशानियां

नवरात्रि में मां महालक्ष्मी का स्मरण करते हुए श्रीसूक्त का पाठ करना पारंपरिक रूप से शुभ माना जाता है। घर में स्वच्छता और अनावश्यक वस्तुओं को हटाने पर भी ध्यान दें।

4. विवाह या रिश्तों से जुड़ी चिंता

नवरात्रि में मां कात्यायनी की पूजा की परंपरा विशेष रूप से प्रचलित है।

ॐ कात्यायन्यै नमः

का श्रद्धापूर्वक जाप किया जा सकता है।

5. घर में कलह और नकारात्मक वातावरण

प्रतिदिन मां दुर्गा के सामने दीपक जलाकर दुर्गा सप्तशती/देवी माहात्म्य का पाठ या उसके चयनित अध्यायों का श्रवण किया जा सकता है। साथ ही घर में संवाद, संयम और सकारात्मक वातावरण बनाए रखना भी महत्वपूर्ण है।

6. कार्य और करियर में बाधाएं

नवरात्रि में मां सिद्धिदात्री का स्मरण करते हुए नियमित प्रार्थना और अपने कार्य में अनुशासन बनाए रखना शुभ माना जाता है। केवल उपाय करने के बजाय वास्तविक प्रयास जारी रखना आवश्यक है।

नौ दिनों में देवी के नौ स्वरूपों की साधना

प्रतिपदा – मां शैलपुत्री: नई शुरूआत और स्थिरता के लिए देवी का स्मरण।

द्वितीया-मां ब्रह्मचारिणी: धैर्य, तप और आत्मसंयम का भाव।

तृतीया-मां चंद्रघंटा: साहस और मानसिक संतुलन की प्रार्थना।

चतुर्थी -मां कूष्मांडा: ऊर्जा और सकारात्मकता के लिए आराधना।

पंचमी – मां स्कंदमाता: परिवार और संतान के कल्याण की प्रार्थना।

षष्ठी-मां कात्यायनी: शक्ति, साहस और वैवाहिक जीवन से जुड़ी मनोकामनाओं के लिए आराधना।

सप्तमी – मां कालरात्रि: भय और नकारात्मकता से मुक्ति की प्रार्थना।

अष्टमी – मां महागौरी: शुद्धता, शांति और मंगल की कामना।

नवमी – मां सिद्धिदात्री: साधना की पूर्णता और आध्यात्मिक उन्नति की प्रार्थना।

कन्या में देवी, स्त्री में शक्ति

शारदीय नवरात्रि का वास्तविक संदेश केवल नौ दिनों की पूजा तक सीमित नहीं है। कन्या पूजन हमें यह स्मरण कराता है कि जिस बालिका में हम देवी का स्वरूप देखते हैं, उसका सम्मान वर्ष के हर दिन होना चाहिए।

नवरात्रि में देवी की पूजा के साथ यदि हम अपने व्यवहार में स्त्री सम्मान, बालिकाओं की सुरक्षा, जरूरतमंदों की सहायता और सेवा भाव को शामिल करें, तो यही शक्ति आराधना का अधिक व्यापक और सार्थक रूप बन सकता है।

मां दुर्गा की आराधना का मूल भाव है—शक्ति, साहस, करुणा और धर्म के मार्ग पर चलना। नवरात्रि के इन नौ दिनों में बाहरी पूजा के साथ अपने भीतर भी सकारात्मक परिवर्तन लाने का संकल्प लिया जाए, तो यह पर्व केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि आत्मचिंतन और आत्मशक्ति का अवसर बन सकता है।

विजयादशमी बनाम दशहरा एक तारीख, दो कहानियाँ, जिसे 90% लोग जो नहीं जानते



आचार्य विपुल वैदिक
वैदिक ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड विशेषज्ञ



अश्विन मास की शुक्ल पक्ष की दशमी एक ऐसा दिन, जो भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना में गहराई से रचा-बसा है। इस दिन देश के एक कोने में माँ दुर्गा की प्रतिमाएँ नदी में विदा की जाती हैं, ढाक की थाप और सिंदूर खेला के साथ विजयादशमी मनाई जाती है; तो दूसरे कोने में रात के अंधेरे को चीरते हुए अग्नि की लपटों में रावण, मेघनाद और कुंभकर्ण के पुतले भस्म हो जाते हैं, और लोग कहते हैं दशहरा की शुभकामना।

अधिकतर लोग मानते हैं कि दोनों एक ही पर्व हैं, लेकिन सच यह है कि इनकी कहानियाँ, नायक और भावार्थ अलग हैं।

विजयादशमी

पौराणिक ग्रंथ कहते हैं जब महिषासुर नामक असुर ने धरती और स्वर्गलोक में उत्पात मचाया, देवताओं को परास्त कर दिया और त्रास का साम्राज्य स्थापित कर लिया, तब ब्रह्मा, विष्णु और महेश ने अपनी शक्तियों का संयोग किया।

इस संयुक्त ऊर्जा से जन्म हुआ महाशक्ति दुर्गा का। नौ रात और दस दिन तक देवी ने महिषासुर से भयानक युद्ध किया। दसवें दिन, माँ दुर्गा ने महिषासुर का वध कर संसार को उसके आतंक से मुक्त किया। इस दिन को कहा गया विजयादशमी, यानी विजय का दसवाँ दिन।

पूर्वी भारत, खासकर पश्चिम बंगाल, ओडिशा, असम और त्रिपुरा में यह दिन दुर्गा पूजा के समापन और प्रतिमा विसर्जन का पर्व है। यहाँ भाव है स्त्री शक्ति और धर्म की विजय।

दशहरा

उत्तर भारत की कथा कहती है जब रावण ने माता सीता का हरण किया, तब भगवान श्रीराम ने माता दुर्गा की 9 दिनों तक आराधना की।

आशीर्वाद पाकर, दशमी के दिन उन्होंने लंका में रावण का वध किया और धर्म, सत्य और मयार्दा की विजय स्थापित की।

इस जीत के उत्सव को कहा गया दशहरा, यानी दशानन का हारना।

उत्तर भारत, राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र के कई हिस्सों में यह दिन रामलीला के समापन और रावण दहन का प्रतीक है। यहाँ भाव है सत्य और मयार्दा की विजय।



दो पर्व, एक तिथि क्यों?

दोनों ही विजय की कथाएँ अलग-अलग काल, पात्र और पृष्ठभूमि से आई, लेकिन तिथि एक- अश्विन शुक्ल दशमी।

शायद यही कारण है कि सदियों में दोनों के उत्सव का स्वर मिलकर एक हो गया, और आज भी लोग इन्हें एक ही मान लेते हैं। लेकिन जानकार कहते हैं विजयादशमी में शक्ति की विजय है, दशहरे में पुरुषोत्तम की।

संस्कृति की खूबसूरती

इस दिन गंगा के घाट से लेकर अयोध्या की गलियों तक, और कोलकाता के पंडाल से लेकर मैसूर के महल तक, भारत की विविधता अपनी चरम पर होती है।

कहीं सिंदूर खेला, कहीं तलवारों का शस्त्र पूजन, कहीं रामलीला, तो कहीं ढाक और धुनुची नृत्य। एक ही दिन, लेकिन हर राज्य अपनी भाषा, रंग और परंपरा में इसे मनाता है। यही है भारत की





ताकत एक तिथि, अनेक उत्सव, एक ही संदेश बुराई पर अच्छाई की विजय।

दशहरा का पर्व दस प्रकार के पापों के परित्याग की सद्प्रेरणा प्रदान करता है

दशहरे का सांस्कृतिक पहलू भी है। भारत कृषि प्रधान देश है। जब किसान खेत में फसल उगाकर अनाज रूपी संपत्ति घर लाता है तो उसके उल्लास और उमंग की कोई सीमा नहीं रहती।

इस प्रसन्नता के अवसर पर वह भगवान की कृपा को मानता है और उसे प्रकट करने के लिए वह उसका पूजन करता है। महाराष्ट्र में इस अवसर पर सिलंगण के नाम से सामाजिक महोत्सव मनाया जाता है। इसमें शाम के समय सभी गांव वाले नए वस्त्रों से सुसज्जित होकर गांव की सीमा पार कर शमी वृक्ष के स्वर्ण रूपी पत्तों को लेकर अपने गांव में वापस आते हैं। फिर उन स्वर्ण रूपी पत्तों का परस्पर आदान-प्रदान किया जाता है। दशहरा का पर्व दस प्रकार के पापों-काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा और चोरी के परित्याग की सद्प्रेरणा प्रदान करता है।

विजयादशमी हमारी राष्ट्रीय अस्मिता और संस्कृति का प्रतीक बन चुका

विजयादशमी एक ऐसा पर्व है, जो हमारी राष्ट्रीय अस्मिता और संस्कृति का प्रतीक बन चुका है। रावण दहन कर हम सत्य के प्रति श्रद्धा व्यक्त कर स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करते हैं। विजय का हिंदू अर्थ है स्वधर्म और स्वदेश की रक्षा, न कि युद्ध कर दूसरों की भूमि, धन और स्वत्व का अपहरण। यही निहितार्थ है विजयपर्व विजयादशमी का।

ऐसी विजय में किसी का पराभव नहीं होता, राक्षसों का भी नहीं हुआ, केवल रावण के अहंकार का संहार हुआ।

दशहरे की शाम के गुप्त धन मंत्र कुबेर जी का आशीर्वाद रहेगा जीवन भर

दशहरे पर नारियल से जुड़े कुछ ऐसे विशेष उपाय बताए गए हैं, जिन्हें करने से आपकी नौकरी में आ रही परेशानियां दूर होती है। खासकर अगर आपकी नौकरी बार-बार छूट जाती है, तो इन विशेष उपायों को जरूर करें। नारियल के इन विशेष उपायों को करने से धन के देवता कुबेर की कृपा भी बनी रहती है।

राम मंदिर में चढ़ाएं नारियल

आपका बिजनेस ठीक से नहीं चल रहा है और आपको लगातार नुकसान हो रहा है, तो यह उपाय आपके काम आ सकता है। दशहरे के दिन एक नारियल लें और उसे सवा मीटर पीले कपड़े में लपेटें। इसके साथ एक जोड़ा जनेऊ और सवा पाव मिठाई लेकर अपने आस-पास के किसी भी राम मंदिर में जाएं और यह सब भगवान को चढ़ा दें।

हनुमान जी को अर्पित करें ये चीजें

हनुमानजी के भक्तों के लिए तुरंत लाभ पाने का सरल उपाय बताया गया है। नारियल पर चमेली के तेल में सिन्दूर मिलाकर स्वास्तिक बनाएं। इस नारियल के साथ लड्डू या गुड़-चना लेकर हनुमान मंदिर जाएँ। हनुमानजी को भोग लगाकर 'ऋणमोचक मंगल स्तोत्र' का पाठ करें। ऐसा करने से आप जल्द ही कर्ज मुक्ति होने लग जाएंगे।

गरीबी दूर करने का उपाय

धन की देवी लक्ष्मी और श्रीगणेश की पूजा कैसे करे और निर्धनता दूर करने के लिए क्या उपाय करना चाहिए। सबसे पहले आपको गणेश जी और माता लक्ष्मी की पूजा करनी है। पूजा में एक नारियल जरूर रखें। पूजा के बाद नारियल को अपनी तिजोरी में रख दें। रात को यह नारियल किसी राम मंदिर में जाकर चढ़ा दें। भगवान श्रीराम से प्रार्थना करें कि आपके जीवन से निर्धनता हमेशा के लिए दूर हो जाए।

धन प्राप्ति का उपाय

दशहरे पर एक खास उपाय बताया गया है जो धन और समृद्धि ला सकता है। इस उपाय के लिए, जले हुए नारियल के छिलकों से भस्म बनाकर उसमें नारियल पानी मिलाकर लेप तैयार करना होगा। इस लेप की सात पुड़िया बनाकर, चार पुड़िया घर के चारों कोनों में, एक पुड़िया छत पर, एक पीपल के पेड़ की जड़ में और एक अपनी जेब में रखनी है। अंत में पीपल के सामने दीया भी जलाएं।

बीमारी से निजात पाने का उपाय

घर में कोई बीमार है या कोई मुसीबत है, तो नारियल से उसे दूर किया जा सकता है। इसके लिए एक नारियल लेकर उसे बीमार व्यक्ति के ऊपर से 21 बार घुमाना होता है। फिर इस नारियल को रावण दहन वाली आग में डाल दिया जाता है। कहा जाता है कि ऐसा करने से बीमारी या मुसीबत दूर हो जाती है।

पावापुरी : जैन धर्म का पवित्र तीर्थ स्थल

भारत की धरती धर्म और आध्यात्मिक परंपराओं से ओत-प्रोत है। इन्हीं में से एक पावापुरी, जैन धर्म का अत्यंत पवित्र और प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है। बिहार के नालंदा जिले में स्थित यह स्थान जैन धर्मावलंबियों के लिए अत्यधिक श्रद्धा का केंद्र है, क्योंकि यही वह स्थल है जहाँ जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी ने निर्वाण प्राप्त किया।



ऐतिहासिक महत्व

भगवान महावीर ने 527 ईसा पूर्व कार्तिक माह की अमावस्या को पावापुरी में निर्वाण प्राप्त किया। उनके शरीर का दाह संस्कार यहीं हुआ और उनकी अस्थियों को प्राप्त करने हेतु हजारों लोगों ने भूमि खोदी। कहा जाता है कि इतनी अधिक मात्रा में मिट्टी खोदी गई कि वहाँ एक विशाल सरोवर बन गया। यही आज का जल मंदिर कहलाता है, जो पावापुरी का मुख्य आकर्षण है।

प्रमुख दर्शनीय स्थल

जल मंदिर - यह मंदिर एक विशाल सरोवर के बीच स्थित है और संगमरमर से निर्मित है। यहाँ भगवान महावीर की चरणपादुका विराजमान हैं। जल मंदिर तक पहुँचने के लिए एक पतली पगडंडी पुल के रूप में बनी हुई है। यह दृश्य अत्यंत मनोहारी और शांत वातावरण प्रदान करता है।

गायन मंदिर (सिंह पुष्करिणी) -यह भी सरोवर के भीतर स्थित एक प्रमुख जैन मंदिर है, जहाँ भगवान महावीर की प्रतिमा स्थापित है।

समोसरण मंदिर - पावापुरी में भगवान महावीर का समोसरण स्थल भी माना जाता है। समोसरण वह दिव्य उपदेश स्थल है जहाँ तीर्थंकर सभी जीवों को उपदेश देते थे। यह मंदिर गोलाकार रूप में निर्मित है।

आध्यात्मिक महत्व

जैन धर्म में पावापुरी को मोक्षभूमि माना गया है। यहाँ आने वाले श्रद्धालु ध्यान और पूजा के माध्यम से भगवान महावीर से आशीर्वाद की कामना करते हैं। कार्तिक अमावस्या को यहाँ विशेष मेला और आयोजन होता है, जिसमें हजारों श्रद्धालु शामिल होकर भगवान महावीर के निर्वाण दिवस का स्मरण करते हैं।

पर्यटन और पहुँच

पावापुरी बिहार की राजधानी पटना से लगभग 90 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। पटना, राजगीर और नालंदा से यहाँ सड़क मार्ग द्वारा आसानी से पहुँचा जा सकता है।

पावापुरी का प्राकृतिक सौंदर्य, शांत वातावरण और धार्मिक महत्ता इसे न केवल जैन अनुयायियों के लिए, बल्कि सभी धर्मावलंबियों और पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बनाते हैं।



वैशाली महावीर स्वामी की जन्मभूमि है तो बिहार का स्थल पावापुरी उनकी समाधि स्थल के तौर पर प्रसिद्ध है. पावापुरी जिसे बिहार में पावा भी कहा जाता है, बिहार के नालंदा जिले में राजगीर और बोधगया के समीप स्थित एक स्थान है पावापुरी, जहां जलमंदिर स्थित है. यहीं पर 528 ईसापूर्व में भगवान महावीर को मोक्ष की प्राप्ति हुई थी. इस मंदिर को जल सरोवर में बनाया गया है. इसमें जब कमल के फूल खिलते हैं तो यहां का नजारा देखने लायक होता है. ऐसा प्रतीत होता है जैसे ज्ञान का सारे कपाट एक साथ खुल गए हों. इस मंदिर का निर्माण भगवान महावीर के बड़े भाई नन्दिवर्धन द्वारा कराया गया था. पावापुरी के इस मंदिर में भगवान महावीर की चरण पादुका को स्थान दिया गया है और इन्ही चरणों को भगवान मानकर श्रद्धालुओं द्वारा पूजा की जाती है.

'धर्मरत्न ज्योतिष सम्मान-2026': देशभर से जुटे विद्वान



नई दिल्ली। जनसंस्कृति (एनजीओ) एवं माँ कल्याणी सेवा संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में ग्रीन लाउंज बैंक्वेट, पीरागढ़ी, नई दिल्ली में धर्मरत्न ज्योतिष सम्मान2026 का भव्य एवं गरिमामय आयोजन किया गया। समारोह में देश के विभिन्न राज्यों से आए ज्योतिषाचार्यों, वास्तु विशेषज्ञों, अंकशास्त्रियों, तंत्र-मंत्र विशेषज्ञों, समाजसेवियों, पत्रकारों एवं गणमान्य अतिथियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. एच.एस. रावत (धर्मगुरु, लेखक, ज्योतिषाचार्य, वास्तु विशेषज्ञ एवं टीवी पैनलिस्ट), मानवेन्द्र सिंह रावत (ज्योतिषाचार्य एवं मोटिवेशनल स्पीकर), नीरज शर्मा (वैदिक ज्योतिषाचार्य, वास्तु विशेषज्ञ, टैरो कार्ड रीडर, रेमेडी एक्सपर्ट, हस्तरेखा एवं नजर दोष विशेषज्ञ) तथा पंडित प्रभात मिश्रा (वैदिक ज्योतिष आचार्य एवं वास्तुशास्त्री) विशेष रूप से उपस्थित रहे। सभी अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया तथा भारतीय संस्कृति एवं वैदिक ज्योतिष के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए।

समारोह में देशभर से आए विद्वानों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए ह्यधर्मरत्न ज्योतिष सम्मानझ्र2026ह्ल से सम्मानित किया गया। सम्मानित होने वालों में आचार्य राजीव रंजन (वैदिक ज्योतिष आचार्य एवं वास्तुशास्त्री), डॉ. संजय अत्रि (ज्योतिर्विद), मोनू भंडारी (माँ कालका महारानी का लाल, ज्योतिषाचार्य एवं तंत्र-मंत्र विशेषज्ञ), आचार्य विवेक भारद्वाज (ज्योतिषाचार्य, हस्तरेखा विशेषज्ञ एवं जेमोलॉजिस्ट), डॉ. अजय कुमार वैद्य, अमित कुमार जैन, दीपिका जैन, आचार्य संजय शर्मा, रंजना यादव, अंशु झा, पंडित विकास शर्मा, सुकेश शर्मा तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में सुभाष झा सहित 100 से अधिक ज्योतिषाचार्यों एवं विशिष्ट व्यक्तित्वों को सम्मानित किया गया।

मुख्य अतिथि डॉ. एच.एस. रावत ने अपने संबोधन में कहा कि वैदिक ज्योतिष भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है, जो मानव जीवन को सही दिशा देने का कार्य करती है। उन्होंने युवा पीढ़ी से भारतीय ज्ञान परंपरा को अपनाने का आह्वान किया।

मानवेन्द्र सिंह रावत ने कहा कि आध्यात्मिक ज्ञान, सकारात्मक सोच और आत्मविश्वास जीवन को नई दिशा देते हैं। नीरज शर्मा ने ज्योतिष, वास्तु एवं आध्यात्मिक उपायों के महत्व पर प्रकाश डाला, जबकि पंडित प्रभात मिश्रा ने वैदिक ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र के वैज्ञानिक पक्ष को विस्तार से समझाया।

समारोह के दौरान सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने उपस्थित अतिथियों का मन मोह लिया। कार्यक्रम में देशभर से आए विद्वानों ने भारतीय संस्कृति, सनातन परंपरा एवं वैदिक ज्योतिष के संरक्षण और प्रचार-प्रसार का संकल्प लिया।



कार्यक्रम का सफल संचालन सुव्यवस्थित ढंग से किया गया। आयोजन की सफलता के लिए आयोजक त्रिलोक कुमार झा एवं अरुण अग्रवाल ने सभी मुख्य अतिथियों, सम्मानित विद्वानों, मीडिया प्रतिनिधियों, सहयोगी संस्थाओं एवं स्वयंसेवकों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि भविष्य में भी भारतीय संस्कृति एवं वैदिक ज्योतिष के उत्थान हेतु ऐसे राष्ट्रीय स्तर के आयोजन निरंतर किए जाएंगे।

समारोह का समापन राष्ट्रगान एवं सभी अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों ने आयोजन की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए इसे वैदिक ज्योतिष के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक पहल बताया।



एक सूत्र, चौदह गांठ और अनंत कृपा का व्रत



अनंत चतुर्दशी-शुक्रवार, 25 सितंबर 2026



पंडित आदित्य झा
वैदिक कर्मकांड विशेषज्ञ



अनंत चतुर्दशी का महत्व: अनंत चतुर्दशी पर भगवान विष्णु की पूजा की जाती है। हिन्दू पंचांग के अनुसार हर साल भाद्रपद महीने के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि को अनंत चतुर्दशी का पर्व मनाया जाता है। पौराणिक मान्यता है कि अनंत चतुर्दशी व्रत पर भगवान विष्णु की पूजा करने से सारे दुख दूर हो जाते हैं। आइए, जानते हैं अनंत चतुर्दशी का महत्व और पौराणिक कहानी।

अनंत चतुर्दशी भारतीय संस्कृति और धर्म में विशेष महत्त्व रखती है। यह पर्व मुख्य रूप से हिंदू धर्म में भगवान विष्णु के अनंत रूप की पूजा के रूप में मनाया जाता है। अनंत चतुर्दशी का अर्थ है 'अनंत' (जिसका कोई अंत न हो) और 'चतुर्दशी' (चौदहवां दिन), जो भाद्रपद महीने के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि को मनाया जाता है।

अनंत चतुर्दशी व्रत के दौरान करें विशेष उपाय



अनंत चतुर्दशी पर भक्तगण उपवास रखते हैं और अनंत सूत्र धारण करते हैं। यह एक धागा होता है जिसमें चौदह गांठें होती हैं और इसे पुरुष दाहिने हाथ में तथा महिलाएं बाएं हाथ में बांधती हैं। इसे धारण करने से भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त होती है और जीवन में सभी बाधाओं का अंत होता है। मान्यता है कि अनंत सूत्र बांधने से व्यक्ति के जीवन में किसी भी प्रकार की समस्या या संकट का निवारण होता है।

अनंत चतुर्दशी व्रत की पौराणिक कथा

अनंत चतुर्दशी से जुड़ी एक प्रमुख पौराणिक कथा महाभारत के काल से संबंधित है। पांडवों के वनवास के समय, श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर को अनंत चतुर्दशी का व्रत रखने का परामर्श दिया था ताकि उनकी कठिनाइयां समाप्त हों। कथा के अनुसार, इस व्रत से युधिष्ठिर को अपना खोया राज्य फिर से प्राप्त हुआ और उनके सभी कष्ट दूर हो गए। इस कथा के आधार पर, यह पर्व संकटों के निवारण और अनंत भगवान की कृपा प्राप्ति के लिए विशेष महत्त्व रखता है।

अनंत चतुर्दशी का सामाजिक और सांस्कृतिक महत्त्व

अनंत चतुर्दशी का महत्व केवल धार्मिक नहीं बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक भी है। इस दिन लोग सामूहिक रूप से भगवान विष्णु की पूजा करते हैं और व्रत रखते हैं, जिससे समाज में एकता और सहयोग की भावना को बढ़ावा मिलता है। कई जगहों पर इस पर्व के साथ-साथ गणेश विसर्जन का भी आयोजन होता है, जिससे यह पर्व और भी विशेष महत्व रखता है।

महाराष्ट्र और कुछ अन्य राज्यों में गणेशोत्सव के अंतिम दिन यानी अनंत चतुर्दशी पर गणपति बप्पा की प्रतिमाओं का विसर्जन किया जाता है। इस दिन गणेश भक्त बड़ी श्रद्धा और धूमधाम से गणेश प्रतिमाओं का विसर्जन करते हैं।

अनंत चतुर्दशी का पर्व हमें यह संदेश देता है कि जीवन में आने वाले कष्ट और समस्याएं अस्थायी होती हैं, और भगवान विष्णु की कृपा से इनका अंत हो सकता है।

यह पर्व यह भी सिखाता है कि हमें धैर्य, श्रद्धा और विश्वास के साथ जीवन के कठिनाइयों का सामना करना चाहिए और भगवान का आश्रय लेना चाहिए।

संतान के लिए रक्षाकवच है जितिया व्रत, माताएं करती हैं जीमूतवाहन देवता की पूजा



पंकज कुमार झा
वैदिक कर्मकांड विशेषज्ञ



जीवित्पुत्रिका को जिउतिया या जितिया व्रत भी कहा जाता है. माताएं जिउतिया व्रत संतान की लंबी आयु और उत्तम सेहत के लिए रखती हैं. इस व्रत को बिना अन्न-जल ग्रहण किए निर्जला रखना होता है. इसलिए इसे कठिन व्रतों में एक माना जाता है.

पंचांग के अनुसार जीवित्पुत्रिका व्रत आश्विन महीने के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को रखा जाता है. इस साल जितिया का व्रत 2 अक्टूबर 2026 को रखा जाएगा और अगले दिन व्रत का पारण किया जाएगा.

जीवित्पुत्रिका व्रत में होती है जीमूतवाहन की पूजा

जीमूतवाहन गंधर्व राजकुमार थे. लेकिन सारा राजपाट छोड़ वे वन चले गए. एक दिन वन में जीमूतवाहन की मुलाकात एक वृद्ध महिला से हुई, जिसका संबंध नागवंश से था. वह महिला बहुत रो रही थी. जीमूतवाहन ने उनसे रोने का कारण पूछा तो उसने कहा कि पक्षीराज गरुड़ को नागों ने वचन दिया है कि हर रोज उसे आहार के रूप में एक नाग दिया जाएगा. वृद्ध महिला ने कहा कि आज उसके बेटे शंखचूड़ की बारी है.

जीमूतवाहन ने वृद्ध महिला से कहा कि आपके बेटे को कुछ नहीं होगा और वह आज पक्षीराज गरुड़ का आहार नहीं बनेगा, क्योंकि आपके बेटे के बदले आज मैं जाऊंगा. यह कहकर जीमूतवाहन गरुड़ के पास चले गए. लाल कपड़े में लिपटे जीमूतवाहन को गरुड़ पंजे में दबोच कर उड़ गए. दर्द से जीमूतवाहन रोने और कराहने लगे.

उसकी आवाज सुन गरुड़ एक शिखर पर रुक गए, तब जीमूतवाहन ने गरुड़ को सारी बातें बताई, जिससे गरुड़ जीमूतवाहन की दया भावना और साहस देखकर बहुत प्रसन्न हुए. उन्होंने जीमूतवाहन को जीवनदान दे दिया और साथ ही वचन दिया कि आज से वह किसी भी नाग को अपना आहार नहीं बनाएंगे.

2 अक्टूबर–नहाय–खाय
03 अक्टूबर–जितिया व्रत
04 अक्टूबर–प्रातः 7:38 बजे पारण

इस तरह से जीमूतवाहन के प्रयासों के कारण नागवंश की रक्षा हुई. मान्यता है कि इसके बाद से ही जीवित्पुत्रिका व्रत में जीमूतवाहन की पूजा होती जाती है. ऐसा माना जाता है कि, जिस तरह जीमूतवाहन ने वृद्ध महिला से संतान शंखचूड़ के जीवन की रक्षा की, उसी प्रकार वे सभी माताओं के संतानों की रक्षा करेंगे और उनकी गोद कभी सूनी नहीं होने देंगे.

संतान के लिए रक्षा कवच है जीवित्पुत्रिका व्रत

जीवित्पुत्रिका व्रत को लेकर ऐसी मान्यता है कि इस व्रत के प्रभाव से संतान को कभी किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता है. साथ ही संतान को दीर्घायु और उत्तम सेहत का वरदान प्राप्त होता है.

महाभारत में ऐसा वर्णन मिलता है कि,अश्वत्थामा ने द्रौपदी के पांच संतानों को मार डाला था. इसके बाद अर्जुन ने उसे बंदी बनाकर कारावास में डाल दिया और अश्वत्थामा से उसकी दिव्यमणि छीन ली. इसके बाद अश्वत्थामा ने क्रोधित होकर बदले की भावना से अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा के गर्भ में पल रहे शिशु को गर्भ में ही नष्ट कर दिया. लेकिन श्रीकृष्ण ने उत्तरा के गर्भ में पल रहे अजन्मे संतान को फिर से जीवित कर दिया. इस तरह के मृत्यु के बाद पुनः जीवित होने के कारण उसका नाम जीवित्पुत्रिका रखा गया.



हिन्दू समाज के लिए सप्त बोध

आत्मरक्षा से आत्मोन्नति तक की यात्रा



भारतवर्ष केवल एक भूखंड नहीं है। यह ऋषियों की तपःभूमि, देवों का निवास, और धर्म के सार्वकालिक प्रयोगों की प्रयोगशाला है। हिन्दू समाज इसी धर्मभूमि की चेतना है। किन्तु जब यह समाज अपने धर्म, स्मृति, परंपरा और कर्तव्यों को विस्मृत करता है, तब उसका अस्तित्व संकट में पड़ जाता है — और आज हम उसी कालखंड से गुजर रहे हैं।

अतः इस घोर वैचारिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संघर्ष के युग में हिन्दू समाज के लिए सात प्रकार के बोधों का जागरण अनिवार्य है — जो उसे न केवल स्मृति दिलाएँगे, बल्कि दिशा भी देंगे। ये हैं —

1. स्वधर्म का बोध, 2. कर्तव्यबोध, 3. शत्रुबोध, 4. सौंदर्यबोध, 5. इतिहासबोध, 6. पुरकताबोध, 7. परिस्थिति बोध, 1. स्वधर्म का बोध आत्मवृत्ति का धर्ममय प्रकाश, हिन्दू जीवनदृष्टि का मूल मंत्र है — धर्मो रक्षति रक्षितः।

परन्तु धर्म की रक्षा तभी संभव है जब उसका स्वभावगत बोध हो। स्वधर्म का बोध का अर्थ है अपने जन्म, प्रकृति, कुल, संस्कृति और आत्मिक लक्ष्य के अनुरूप धर्म को समझना और निभाना।

गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं:

श्रेयान स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात।

(अधिगुणों सहित परधर्म की अपेक्षा, दोषयुक्त भी स्वधर्म श्रेष्ठ है।)

आज का हिन्दू यह नहीं जानता कि उसका धर्म क्या है?

क्या केवल व्रत रखना, पूजा करना, मंदिर जाना ही धर्म है?

नहीं।

धर्म का अर्थ है — सत्य, श्रद्धा, संयम, आत्मविवेक, राष्ट्रभक्ति, मातृभूमि सेवा, और सनातन मूल्यों के अनुसार जीवन जीना।

जब तक हिन्दू समाज स्वधर्म नहीं पहचानेगा वह या तो वामपंथी भ्रमों में उलझेगा, या आब्राह्मिक आक्रांताओं की कूटनीतियों में।



स्वधर्म का बोध ही हिन्दू अस्मिता की प्रथम रक्षा पंक्ति है।

2. कर्तव्यबोध : जीवन के प्रत्येक स्तर पर धमार्नुसार उत्तरदायित्व यदि स्वधर्म ज्ञान है, तो कर्तव्यबोध उसका आचरण है।

हिन्दू जीवन केवल सांसारिक उपभोग नहीं, धर्ममय उत्तरदायित्व की श्रृंखला है

गृहस्थ के लिए यज्ञ, ब्राह्मण के लिए वेदाध्ययन, क्षत्रिय के लिए शौर्य, वैश्य के लिए सेवा, और शूद्र के लिए सहयोग।

आज जब समाज मेरे अधिकार की बात करता है, हिन्दू को मेरा धर्म और मेरा कर्तव्य क्या है? यह पूछना चाहिए।

महाभारत में युधिष्ठिर से कहा गया:

कर्तव्यमेव कर्तव्यं न प्रीतिर्न प्रलोभनम।

(कर्तव्य ही परम धर्म है, न लाभ, न मोह, न भय।)

यदि एक हिन्दू पिता, पुत्र, विद्यार्थी, नागरिक, सेवक, सन्यासी — सभी अपने-अपने धर्मसम्मत कर्तव्यों का पालन करें, तो हिन्दू समाज को कोई शक्ति परास्त नहीं कर सकती।

3. शत्रुबोध : धर्मद्रोही शक्तियों की पहचान शत्रु केवल तलवार लेकर आने वाला बाहरी हमलावर नहीं होता। आज शत्रु शिक्षा के पाठ्यक्रमों में है, ओटीटी के कंटेंट में है, नारीवाद और वामपंथ के बौद्धिक जाल में है।

वह आपको सिखाता है कि — हिन्दू होना अपराध है, ब्राह्मण होना शोषण है, परिवार रखना रूढ़िवाद है, और धर्म रक्षा करना कट्टरता है।

मनुस्मृति कहती है:

यत्र धर्मो धर्मश्च, सत्यं चानृतमेव च।

(जहाँ धर्म और अधर्म का संमिश्रण हो, वहाँ सत्य को पहचानना ही धर्म रक्षा है।)

आज हिन्दू समाज को शत्रुबोध की आवश्यकता है —

जिससे वह पहचान सके कि कौन उसकी जड़ों को काट रहा है, और कौन मित्र के वेश में विघातक बन चुका है।

4. सौंदर्यबोध : धर्म, चरित्र और सृष्टि में ईश्वरीय सौंदर्य का दर्शन

हिन्दू परंपरा में सौंदर्य केवल रूप या वस्त्र का विषय नहीं रहा, यह एक आध्यात्मिक चेतना है।

भारत में सुंदरता को सत्य और शिव के साथ जोड़ा गया:

सत्यम शिवम सुंदरम।

जब समाज में सौंदर्यबोध होता है —

-तब स्त्री श्रृंगार में मयार्दा होती है,

- वाणी में मधुरता होती है,

- संस्कृति में दिव्यता होती है,

- कला में ईश्वर का स्पंदन होता है।

आज इस सौंदर्यबोध का लोप हो चुका है।

बोलचाल, व्यवहार, पहनावा, नृत्य और सामाजिक भाषा सब भोगवादी अश्लीलता से दूषित हो चुके हैं।

हिन्दू समाज को पुनः उस सौंदर्य की ओर लौटना होगा, जो धार्मिक, सात्विक और संस्कारशील हो।

5. इतिहासबोध : स्मृति की रक्षा ही अस्मिता की रक्षा जिस समाज को यह नहीं पता कि वह कौन था, क्या बना, और क्यों गिरा — वह इतिहास को दोहराने को अभिशप्त होता है।

हिन्दू समाज का इतिहास कोई दया की कथा नहीं है, यह बलिदान, तप, संघर्ष और पुनरुत्थान की गाथा है।

रामायण और महाभारत केवल पौराणिक ग्रंथ नहीं, इतिहास के बोधगम्य प्रतीक हैं।

आज जब विद्यालयों में गजवा-ए-हिन्द की प्रशंसा होती है और वीर सावरकर को गद्दार बताया जाता है —

तब हिन्दू समाज को इतिहासबोध से ही अपनी जड़ों की पुनः रक्षा करनी होगी।

6. पुरकताबोध : पूर्वजों, परंपराओं और धर्म का उत्तराधिकार, एक सभ्य समाज वह होता है जो पूर्वजों से प्राप्त ज्ञान, संस्कृति और परंपरा को आगे की पीढ़ियों तक यथावत पहुंचाता है।

पुरकताबोध का अर्थ है —

मैं केवल एक व्यक्ति नहीं हूँ, मैं अपने ऋषियों, पितरों, गुरुओं और कुलधर्म का जीवंत प्रतिनिधि हूँ।

जो समाज यह मानता है कि परंपरा रूढ़ि है, वह स्वयं को काटकर खड़ा रहना चाहता है — बिना जड़ के।

वास्तव में हिन्दू संस्कृति संस्करणशील परंपरा है



— जो समयानुकूल ढलती है, पर मूल धर्म कभी नहीं छोड़ती।

आज हमें अपने संस्कार, व्रत, शुद्ध भाषा, उत्सव, गुरुकुल, वैदिक रीति — इन सबको संजोना ही होगा, क्योंकि यही हमारी आध्यात्मिक संतानें हैं।

7.परिस्थिति-बोध — व्यक्ति से राष्ट्र तक, निर्णय का मूल है समय की समझ, आज का युग केवल भावनाओं से नहीं, रणनीति और चातुर्य से जीता जाता है।

हिन्दू समाज हजारों वर्ष से अविचारशील सहिष्णुता के कारण ही बार-बार छला गया।

आचार्य चाणक्य कहते हैं:

कालो हि दुरतिक्रमः।

(समय की गति को जिसने नहीं पहचाना, वह नष्ट हुआ।)

परिस्थिति-बोध का अर्थ केवल संकटों को देख लेना नहीं होता। यह एक गहरा जीवन-बोध है, जिसमें मनुष्य अपने समय, अपने स्थान, और अपने चारों ओर चल रही घटनाओं को सार्थक रूप से समझता है — और उस समझ के आधार पर अपने विचार, निर्णय और दिशा को तय करता है।

यह बोध केवल किसी राजा, नेता या संगठन के लिए नहीं, हर व्यक्ति के लिए अनिवार्य है, क्योंकि जब व्यक्ति परिस्थिति को नहीं समझता, तब वह अपने जीवन को अंधकार में धकेल देता है — और जब समाज यह भूल करता है, तब वह अपने भविष्य को पराधीनता या विनाश की ओर ले जाता है।

एक व्यक्ति के लिए परिस्थिति-बोध क्यों आवश्यक है?

क्योंकि व्यक्ति जब यह नहीं समझता कि वह किस वातावरण में रह रहा है, कौन-सी शक्तियाँ उसके विचारों, आस्थाओं, निर्णयों और संबंधों को प्रभावित कर रही हैं — तब वह अपना जीवन एक भ्रम में जीता है। वह प्रेम के नाम पर छल, स्वतंत्रता के नाम पर विनाश, और आधुनिकता के नाम पर अपनी अस्मिता का क्षरण स्वीकार कर लेता है।

आज का युवा यदि परिस्थिति-बोध से शून्य है, तो वह वोकिज्म, पॉप कल्चर, नारीवाद और 'सेल्फ एक्सप्रेशन' जैसी पश्चिमी अवधारणाओं को प्रगतिशीलता मान लेता है, जबकि वे उसके अपने संस्कारों, परिवार और आत्मबोध को खोखला कर रही होती हैं।

एक परिवार के लिए परिस्थिति-बोध क्यों आवश्यक है?

क्योंकि आज परिवार संस्था पर ही सबसे बड़ा वैचारिक प्रहार हो रहा है। करियर पहले, विवाह बाद में, शादी जरूरी क्यों?, पैरेंट्स टॉक्सिक होते हैं — ये सब वाक्य केवल ट्रेंड नहीं, एक लंबी विचारधारा का प्रभाव हैं जो परिवार की परिभाषा को नष्ट कर रही है।

यदि परिवार परिस्थिति को नहीं समझेगा, तो वह धीरे-धीरे अपना मूल्य, अपनी एकता, और अपनी पीढ़ियों की जड़ें खो देगा।

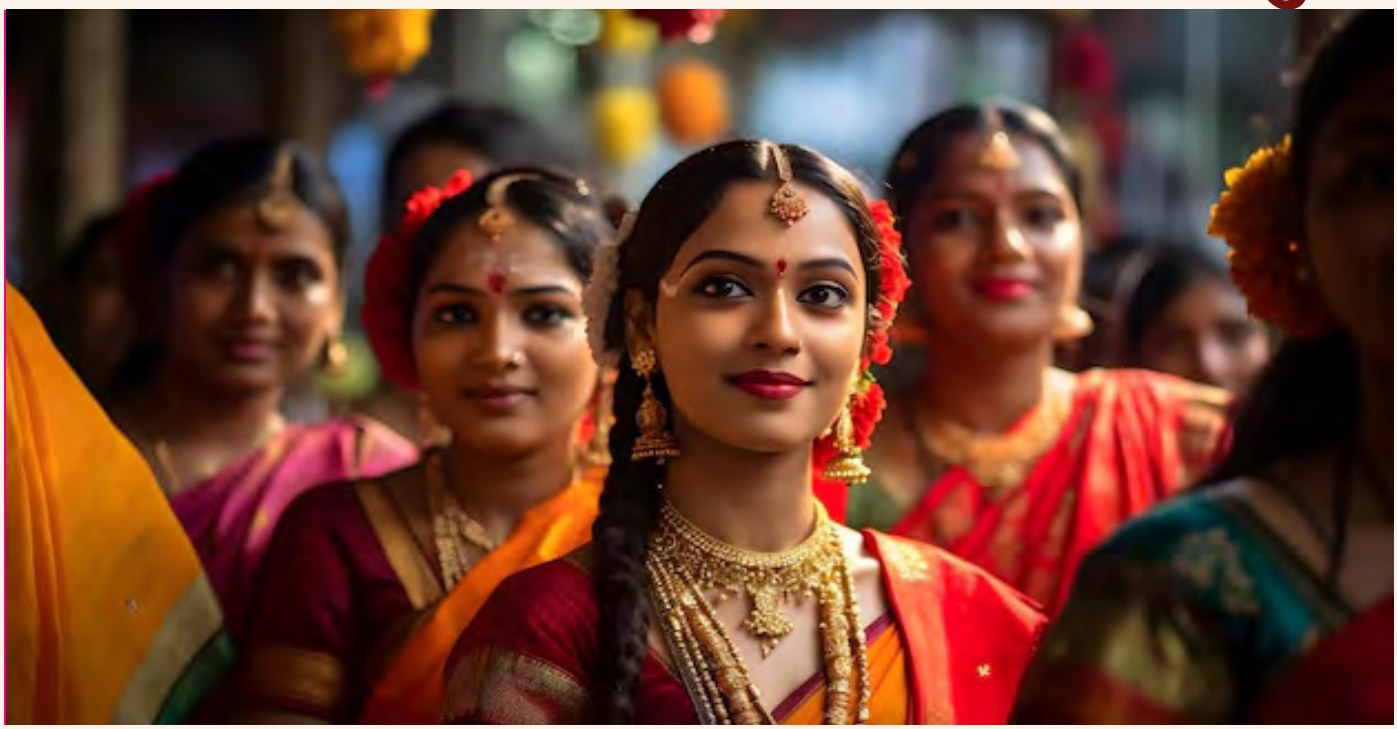
एक समाज और राष्ट्र के लिए परिस्थिति-बोध क्यों अनिवार्य है?

क्योंकि राष्ट्र वही बचते हैं जो अपने समय के संकेतों को समझते हैं और समय से पहले तैयारी करते हैं।

हिन्दू समाज का इतिहास गवाह है कि जब-जब हमने समय को नहीं समझा, तब-तब हमने मंदिरों का विध्वंस, नारी सम्मान की त्रासदी, विभाजन, घर में पलते शत्रु, और संस्कृति की चोरी का दंश झेला है।

हमने यह मान लिया कि जो शांत है, वह सुरक्षित है। पर यह भूल है — शांति बिना शक्ति के केवल आमंत्रण होती है अपमान का।

आदिशक्ति का प्रतिबिंब : स्त्री रूप में मां दुर्गा



नवरात्रि में भारतीय नारी एक अलग ही सजधज कर नए रूप रंग में दिखाई देती है। भारतीय स्त्री का हर रूप अनूठा है, अनुपम है, अवर्णनीय है। साक्षात देवी स्वरूपा इनका ये व्यक्तित्व अनोखा है। साहस, संयम और सौदर्य जैसे दिव्य गुणों को समयानुरूप इतनी दक्षता से प्रकट करती हैं कि सारा परिवेश चौक उठता है।

यही कारण है कि नवरात्रि त्यौहार का आगमन इनके रोम-रोम से प्रस्फुटित होता है। इनके मन-धरा से सुगंधित लहरियां उठने लगती है। श्रृंगार में,रास-उल्लास में, आचार-विचार और व्यवहार में, रूचिओं, प्रकृतियों और प्रवृतियों से त्यौहार के सजीले रंग सहज ही झलकने लगते हैं।

गति, लय ताल तरंग सब पायल के नन्हें घुंघरूओं से खनक उठते हैं। ब्राह्य श्रृंगार से आंतरिक कलात्मकता मुखित होने लगती है। पर्वो की रौनक से चेहरा चमक उठता है। शील, शक्ति और शौर्य का विलक्षण संगम है भारतीय नारी।

9 पवित्र दिनों की नौ शक्तियां नवरात्रि में थिरक उठती हैं। ये शक्तियां अलौकिक है। परंतु दृष्टि होतो इसी संसार की लौकिक सत्ता है। अदृश्य नहीं है, वे यही हैं। त्यौहारों पर व्यंजन परोसती अन्नपूर्णा के रूप में, श्रृंगारित स्वरूप में वैभव लक्ष्मी बनकर, बौद्धिक प्रतिभागिता दर्ज कराती सरस्वती और मधुर संगीत की स्वरलहरी उच्चासरती वीणापाणि के रूप में।

शौर्य दशार्ती दुर्गा भी वही, उल्लासमयी थिरकने रचती, रोम-रोम से पुलकित अम्बा भी वहीं है। एक नन्ही सी कुंकुम बिंदिया उसकी आभा में तेजोमय अभिवृद्धि कर देती है। कंगन की कलाकारी जिसकी कोमल कलाई में सजकर कृतार्थ हो जाती है। जो स्वर्ण शोरूम में सहेजा होता है वह उस पर सजकर ही धन्य होता है।

मेंहदी की आकृतियां ही सुंदर होती तो पन्नों पर क्यों नहीं खिल उठती? यह उसकी गुलाबी नर्म हथेलियां होती हैं जो मेहदी को भव्यता प्रदान करती है उसके श्रृंगार में मन के समूचे सुंदर भाव सुव्यक्त हो उठते हैं। गरबों की थिरकन से लेकर पूजा की पुलक तक में संपूर्ण संस्कृति उसके सौम्य स्वरूप में झरती है।

मधुर-मुसकान और मोहक व्यक्तित्व से संपन्न सृष्टि की इतनी सुंदर हमारे बीच है, पर हमारी दृष्टि क्यों बाधित हो जाती है? क्यों नहीं पहचान पाते हम।

भारतीय नारी में शून्य से शिखर तक पहुंचने की अशेष शक्ति निहित है इनमें। इस नवरात्रि पर प्रार्थना करें, हर देवी में ऐसे सुंदर भाव कि समा सके वह आसमान और नाप सके सारी धरती अपने सुदृढ़ कदमों में।

भगवती दुर्गा के 108 नामों में आद्या (मूल, आरंभ) है, तो चिता (मृत्युशैया) भी। लोकमानस में देवी के कई रूप हैं। कुछ स्नेहशील और ममतामय हैं, तो कुछ हिंसक और डरावने भी। उनका सर्वाधिक शांत, सुंदर और कांतिमय रूप गौरी है और सबसे उग्र, हिंसक और क्रूर रूप देवी काली का है। अपने इन्हीं विविध रूपों और नामों के साथ मां दुर्गा पूजी जाती हैं। इसकी दो तरह से व्याख्या की जा सकती है-

हर स्त्री है दुर्गा

देवी की आठ भुजाओं और उनमें सुशोभित अस्त्र-शस्त्रों की तुलना आज या पहले की स्त्री से करें। हम देखेंगे कि हमारे समाज में स्त्रियों पर बहुआयामी कर्तव्य और उत्तरदायित्व का बोझ रहा है और उन्होंने पूरी सफलता, सामर्थ्य और निष्ठा के साथ उनका निर्वहन भी किया है। स्पष्ट है कि स्त्री-अस्मिता के सर्वोत्तम प्रतीक के रूप में देवी आराधना धार्मिक दृष्टि से ही नहीं अपितु सामाजिक दृष्टि से भी तर्कसंगत होगी।

परिवर्तन की प्रेरक

सद्गुरूनाथ जी महाराज कहते हैं कि देवी जब अपना रूप बदलती हैं, तो वे परिवर्तन के लिए प्रेरित करती हैं। सर्जक भंजक में परिवर्तित हो सकता है। भंजक रक्षक में बदल सकता है। जो



हानि पहुंचाता है वह संरक्षण कर सकता है। जो इच्छा करता है वह संयम भी दिखा सकता है। देवी हमारे इर्द-गिर्द की दुनिया हैं। देवी हमें प्रेरित करती हैं। वे हमारे भीतर इच्छा पैदा करती हैं।

नवदुर्गा का नवाचार

नवदुर्गा के नौ रूपों में शैलपुत्री को स्वाभिमानी और दृढ़ इच्छाशक्ति संपन्न, ब्रह्मचारिणी को स्थिरमना और संघर्षशील और चंद्रघंटा को कल्याणकारिणी माना जाता है। इसी तरह कूष्मांडा गर्भ धारण करने वाली, स्कंदमाता और कात्यायनी-स्वरूप संततियों के माता-पिता और पालनहार, कालरात्रि जड़ जीवन से मुक्त होकर एक चेतना सम्पन्न मोक्ष की प्राप्ति आदि की द्योतक है।

भगवती का आठवां रूप महागौरी और नौवां रूप सिद्धिदात्री अर्थात ज्ञान अथवा बोध देने वाली देवी का है। ये देवी दुर्गा के सबसे दुर्लभ रूप हैं जिनके साक्षात्कार के लिए परम सिद्ध होने की आवश्यकता है। सूक्ष्मता से देखें तो एक आम भारतीय नारी में भी ये दुर्लभ रूप उपस्थित हैं, किंतु उनका सम्पूर्णता के साथ दर्शन से करने के लिए अपेक्षित धैर्य की आवश्यकता है।

आज स्त्री सशक्त है। बदलते समय के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है। संयम, ज्ञान, समझ, धैर्य, आत्मविश्वास और साहस से वह आगे बढ़ रही है।

शक्ति का अर्थ सिर्फ शारीरिक बल नहीं होता है। शक्ति का अर्थ मानसिक और भावनात्मक संतुलन भी है। नारी इस संतुलन के शिकार पर है जो अध्यात्म, माया और आधुनिकता का अद्भुत संयोजन है। इस समाज की भी जवाबदेही है कि नवरात्र में सिर्फ शक्ति की उपासना नहीं करें बल्कि स्त्रियों के प्रति सम्मान की भावना रखें।



भ्रूण हत्या, दहेज, हिंसा, बलात्कार से मुक्त समाज ही माँ दुर्गा की असली पूजा होगी एवं भयमुक्त नारी ही माँ दुर्गा की असल आराधक होगी। इस बदलते और स्त्रियों के लिए और घातक होते दौर में स्त्री को अपने शक्ति रूप का स्मरण करना होगा। आज स्त्री ने हर रूप में स्वयं को साबित किया है। दकियानूसी सोच के कैद में फंसी स्त्री इन बंधनों से आजाद हो रही है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।
'जिस कुल में स्त्रियों का आदर है वहाँ देवता प्रसन्न रहते हैं।'

इस प्रकार शास्त्रों में नारी की महिमा बतायी गयी है। भारतीय समाज में नारी का एक विशिष्ट व गौरवपूर्ण स्थान है। वह भोग्य नहीं है बल्कि पुरुष को भी शिक्षा देने योग्य चरित्र बरत सकती है। अगर वह अपने चरित्र और साधना में दृढ़ तथा उत्साही बन जाय तो अपने माता, पिता, पति, सास और श्वसुर की भी उद्धारक हो सकती है।

धर्म (आचारसंहिता) की स्थापना भले आचार्यों ने की, पर उसे सँभाले रखना, विस्तारित करना और बच्चों में उसके संस्कारों का सिंचन करना इन सबका श्रेय नारी को जाता है। भारतीय संस्कृति ने स्त्री को माता के रूप में स्वीकार करके यह बात प्रसिद्ध की है कि नारी पुरुष के कामोपभोग की सामग्री नहीं बल्कि वंदनीय, पूजनीय है। भ्रूण हत्या, दहेज, हिंसा, बलात्कार से मुक्त समाज ही माँ दुर्गा की असली पूजा होगी ।

नारायण कवच का पाठ करने से बढ़ता है सौभाग्य, जानिए किस दिन से करें शुरूआत



ज्योतिषाचार्य विजय मेहता
एस्ट्रोलॉजर एवं न्यूमेरोलॉजिस्ट



हिंदू धर्म में मंत्रों, स्तोत्र और कवच के पाठ करने के विशेष महत्व बताया गया है। बताया जाता है कि अगर सही समय पर इनका पाठ किया जाता है, तो व्यक्ति को उत्तम फल की प्राप्ति हो सकती है। साथ ही व्यक्ति के सुख-सौभाग्य में वृद्धि होती है। नारायण कवच के पाठ के बारे में कहा जाता है कि यह कवच साक्षात श्रीहरि विष्णु का कवच रूपी पाठ है। इस कवच का पाठ करने से जातक को कष्टों और आर्थिक परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ता है।

इसलिए सभी कवच में नारायण कवच को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इस कवच को ब्रह्मास्त्र के समान माना जाता है। ऐसे में अगर आप रोजाना नारायण कवच का पाठ करते हैं, तो आपको भगवान श्रीहरि विष्णु की कृपा प्राप्त हो सकती है। इसलिए आज इस आर्टिकल के जरिए बताने जा रहे हैं कि नारायण कवच का पाठ किस दिन करने से उत्तम फलों की प्राप्ति हो सकती है।



गुरुवार को करें नारायण कवच का पाठ

अगर आप भी नारायण कवच का पाठ कर रहे हैं, तो इस कवच का पाठ गुरुवार से शुरू करना चाहिए। धार्मिक मान्यता है कि गुरुवार का दिन जगत के पालनहार भगवान श्रीहरि विष्णु को समर्पित होता है। ऐसे में गुरुवार के दिन नारायण कवच का पाठ करने से जातक को उत्तम फलों की प्राप्ति होती है। साथ ही जीवन में आने वाली सभी समस्याओं से छुटकारा मिल जाता है। नारायण कवच का पाठ करने से व्यक्ति को शारीरिक और मानसिक दोनों तरह की बुराइयों से बचाता है।

इसका कवच का नियमित रूप से पाठ करने से व्यक्ति की सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं और मन शांत रहता है। नारायण कवच का पाठ करने से जीवन में सुख आता है और यह कवच स्वयं नारायण का है। इसलिए जो भी जातक इस कवच का नियमित पाठ करते हैं, वह जीवन में हमेशा सुरक्षित महसूस करते हैं और उनके सुख-सौभाग्य में वृद्धि होती है।

महत्व

नारायण कवच का पाठ करने से जातक को सभी कार्यों में सफलता मिलती है और व्यक्ति को मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। इस कवच का पाठ करने से व्यक्ति की आध्यात्मिक वृद्धि होती है। बताया जाता है कि अगर आपको ऐसा लग रही है कि उम्मीद के सभी दरवाजे बंद हो गए हैं, तो नारायण कवच का पाठ जरूर करना चाहिए।

कवच श्री मद्भागवत छठा स्कंध के अध्याय आठ में है।

विधि तो बहुत है जो आम मनुष्य के लिए संभव नही, नारायण कवच धारण करना भी अपने आप मे कठिन है। एक बार ही शुद्ध अंतरात्मा से पाठ कीजिए शुद्ध अक्षर का उच्चारण कीजिये इतनी अच्छी से पाठ कीजिये कि आपको महसूस हो कि मैं प्रभु की शरण मे प्रवेश कर गया हूं।

इस पाठ को प्रातःकाल या संध्या समय किया जा सकता है.शांत और पवित्र स्थान चुनें.भगवान विष्णु की प्रतिमा के सामने दीपक और अगरबत्ती जलाकर श्रद्धा से पाठ करें.संकल्प लेकर शुरूआत करें और पाठ के बाद विष्णु सहस्त्रनाम या ध्यान करें.

पंचतत्वों की साधना : शरीर, मन और आत्मा की शुद्धि का मार्ग



महंत श्री सुदर्शन दास जी महाराज



समस्त सृष्टि और मनुष्य शरीर पाँच मूलभूत तत्वों — पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश — से निर्मित हैं।

जब तक ये तत्व संतुलित रहते हैं, तब तक मनुष्य स्वस्थ, ऊर्जावान और प्रसन्न रहता है।

इन तत्वों का असंतुलन ही रोग, थकान और मानसिक अस्थिरता का कारण बनता है।

इसलिए पंचतत्वों की साधना केवल योगिक क्रिया नहीं, बल्कि एक जीवन-संवर्धन की प्रक्रिया है।

पृथ्वी तत्व — स्थिरता और शक्ति का आधार

पृथ्वी तत्व शरीर को मजबूती और स्थायित्व देता है। इसमें विषहरण की अद्भुत शक्ति होती है।

प्रतिदिन प्रातःकाल नंगे पैर हरी घास या मिट्टी पर चलना पृथ्वी तत्व को संतुलित करता है।

इससे शरीर के विष बाहर निकलते हैं और धरती की जीवनी शक्ति शरीर में समाहित होती है।

भावना रखें: पृथ्वी माता की ऊर्जा मेरे भीतर प्रवेश कर रही है और मेरा शरीर निर्मल बन रहा है।

सप्ताह में एक-दो बार मिट्टी स्नान (मृतिका स्नान) भी करें। इससे त्वचा कोमल बनती है और शरीर से विषैले तत्व बाहर निकलते हैं।

जल तत्व — जीवन और शुद्धि का स्रोत

जल में सजीवता और विद्युत शक्ति दोनों होती हैं।

प्रतिदिन ताजे जल से स्नान शरीर में नई ऊर्जा का संचार करता है।

सुबह उठकर खाली पेट एक गिलास स्वच्छ जल पीना (उषापान) वरुण देवता की उपासना मानी गई है।

यह पाचन सुधरता है और शरीर के अंदर के विष बाहर निकालता है।

भावना रखें: यह जल अमृत के समान है, जो मेरे भीतर जीवन और शांति भर रहा है।

पानी धीरे-धीरे, छोटे-छोटे घूँटों में पिएं — जैसे दूध पिया जाता है। इससे जल तत्व सही रूप में शरीर में अवशोषित होता है।

अग्नि तत्व — ऊर्जा और तेज का स्रोत

अग्नि ही जीवन का विकास करती है। इसका प्रत्यक्ष रूप सूर्य है।

प्रातःकाल स्नान के बाद गीले शरीर से सूर्य देव को अर्घ्य दें।

यह शरीर में अग्नि तत्व को सक्रिय करता है और नेत्र, त्वचा व रक्त रोगों से रक्षा करता है।

भावना रखें: सूर्य का तेज मेरे शरीर में प्रवेश कर रहा है और हर कोशिका को प्रकाशित कर रहा है।

रविवार को व्रत रखना या एक समय बिना नमक का भोजन करना सूर्य उपासना का भाग है। इससे तेज, आत्मबल और मानसिक स्थिरता बढ़ती है।

वायु तत्व — प्राण शक्ति का पोषक

वायु के बिना जीवन असंभव है। यह शरीर में प्राण ऊर्जा का प्रवाह करती है।

प्राणायाम के माध्यम से हम वायु में विद्यमान सूक्ष्म पोषक तत्वों को आत्मसात करते हैं।

विधि:

स्नान के बाद किसी शांत स्थान पर पद्मासन में बैठें।

धीरे-धीरे नासिका से सांस खींचें और यह भावना रखें —

मैं विश्वव्यापी प्राण ऊर्जा को अंदर खींच रहा हूँ। कुछ क्षण रुकें और फिर धीरे-धीरे सांस बाहर छोड़ते हुए सोचें —

ह्लमेरे शरीर के सभी रोग और दोष वायु के साथ बाहर जा रहे हैं।ह्व

नियमित प्राणायाम से शरीर में हल्कापन, उत्साह और नई जीवन शक्ति का अनुभव होता है।

आकाश तत्व — चेतना और विचारों का स्रोत

आकाश तत्व केवल रिक्त स्थान नहीं, बल्कि विचारों और तरंगों का सूक्ष्म भंडार है।

हमारी मानसिक अवस्था जैसे विचारों की तरंगें आकर्षित करती है, वैसे ही परिणाम देती है।

प्राणायाम के बाद कुछ देर आकाश ध्यान करें।

आराम से लेट जाएं, आँखें बंद करें और अपने चारों ओर फैले नीले आकाश का ध्यान करें।

भावना रखें: नीले आकाश में फैली दिव्य शक्तियाँ और सद्विचार मेरे भीतर प्रवेश कर रहे हैं।

यह साधना मन को शांति, सकारात्मकता और उच्च चेतना प्रदान करती है।

दीप और धरा: मिट्टी के कणों में बसता परमात्मा

रंजीत मिश्रा



मिट्टी — सृष्टि का प्राण तत्व

मिट्टी केवल एक भौतिक तत्व नहीं, बल्कि सृष्टि का प्राण है। परमात्म विषयक चिंतन कहता है कि मिट्टी के प्रत्येक कण में परमतत्व व्याप्त है। यह पृथ्वी तत्व न केवल जीवों का आधार है, बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि का पोषक भी है।

धरती अपने वक्षस्थल पर संपूर्ण जगत को धारण करती है — इसलिए वह धरती माँ कहलाती है। मिट्टी उसकी आत्मा है, जो बीजों में प्राण भरकर जीवन को जन्म देती है। यही कारण है कि मिट्टी मृत भी है और प्राणवान भी।

पंचतत्वों में पृथ्वी का महत्त्व

पृथ्वी पंचभूतों में एक तत्व है, किंतु इसमें शेष चार तत्व — जल, अग्नि, वायु और आकाश — सभी का समावेश है। मनुष्य का शरीर भी इन्हीं तत्वों से बना है। इसीलिए मिट्टी और मनुष्य का रिश्ता केवल स्थूल नहीं, बल्कि आत्मिक है।

भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं से लेकर माता पार्वती द्वारा गणेशजी की सृष्टि तक — हर युग में मिट्टी का पौराणिक और आध्यात्मिक महत्त्व रहा है।

मिट्टी का दीप — जीवन का प्रतीक

धार्मिक अनुष्ठानों में मिट्टी के दीप का प्रज्ज्वलन केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि जीवन का प्रतीक है।

दीपक का पात्र पृथ्वी तत्व का, उसमें जलने वाला घी या तेल जल तत्व का, बाती वायु तत्व का, ज्योति अग्नि तत्व का और उसकी चमक आकाश तत्व का प्रतीक है।



इस प्रकार एक छोटा सा दीपक पूरे ब्रह्मांड का प्रतिनिधि बन जाता है।

अथर्ववेद का पृथ्वी सूक्त — मिट्टी रूपी ब्रह्म

अथर्ववेद के बारहवें कांड में वर्णित पृथ्वी सूक्त मिट्टी को ब्रह्म का प्रतीक बताता है। इसमें कहा गया है कि मिट्टी ही वह तत्व है जो सूर्य, चंद्र, तारे और दिशाओं को अपने आलोक से ज्योतिर्मय करती है।

मिट्टी रूपी यह ब्रह्म अज्ञान रूपी अंधकार को दूर कर ज्ञान और जीवन की रोशनी फैलाता है।

कबीर की माटी और मनुष्य का सत्य

संत कबीरदास जी ने मिट्टी की महिमा को सरल परंतु गूढ़ शब्दों में समझाया —

माटी कहे कुंभार से, तू क्यों रोंधे मोय,
एक दिन ऐसा आएगा, मैं रौंदूंगी तोय।

यह पंक्ति हमें याद दिलाती है कि मनुष्य मिट्टी से बना है और अंत में उसी में विलीन होना है। मिट्टी से ही जीवन का आरंभ और अंत दोनों हैं — वही जन्म है, वही मृत्यु।

धरती माँ — सृष्टि की पालक और शिक्षक

धरती माँ कभी लक्ष्मी स्वरूपा होती है, कभी पार्वती तो कभी सरस्वती। वह रचती भी है, पोषित भी करती है और आवश्यक होने पर विनाश कर चेतना भी देती है।

भूकंप, अतिवृष्टि या महामारी — ये सब धरती की चेतावनियाँ हैं कि मनुष्य अपनी सीमाएँ न भूले।

दीप की यात्रा — अंधकार से प्रकाश तक

दीपक का संघर्ष ही उसका सौंदर्य है। वह अंधकार, वायु और तूफानों से जूझता है, पर बुझता नहीं।

दीपक हमें सिखाता है कि विपरीत परिस्थितियों में भी अपने प्रकाश को बनाए रखना ही सच्चा जीवन है।

अंधकार हर बार लौटता है, लेकिन मिट्टी के दीये हर बार उसे परास्त करते हैं। यही दीप संस्कृति का संदेश है — अंधकार से संवाद कर उजाला रचने का साहस।

मिट्टी — समता, करुणा और सृजन का प्रतीक

मिट्टी का दीप न राजा के लिए अलग जलता है, न गरीब के लिए अलग।

वह राजमहल और झोपड़ी, दोनों को समान रूप से आलोकित करता है। उसमें अहंकार नहीं, केवल कर्तव्य है।

युगों से मिट्टी के ये दीये समानता, करुणा और सृजन का प्रतीक बनकर जगत को आलोकित करते आ रहे हैं।

मिट्टी का संदेश

मिट्टी हमें यह सिखाती है कि जीवन विनम्रता, धैर्य और सेवा का नाम है।

दीपक की तरह हमें भी अंधकार में रोशनी बनना है, क्योंकि मिट्टी से ही सृष्टि है और उसी में परम सत्य भी।

मिट्टी मौन है, पर सक्रिय है; वह अंधकार से नहीं डरती, उसे मिटाकर नया सवेरा रचती है

यज्ञ : जीवन का शाश्वत धर्म और शिवत्व का पथ

मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तानि नाहं न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राणनेत्रे।

न च व्योम भूमिर्न तेजो न वायुश्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम

यह महान शिवस्तोत्र केवल एक मंत्र नहीं, बल्कि आत्मबोध का सूत्र है। यह स्मरण कराता है कि आत्मा न मन है, न बुद्धि, न अहं, न चित्त। आत्मा तो शुद्ध, चैतन्यमय और आनंदस्वरूप शिव है।

भगवान शिव ज्ञान, विवेक, विचार और समाधि — अर्थात समाधान के देवता हैं। अज्ञान जीवन की सबसे बड़ी बाधा है, और शिवत्व ही उसका निवारण।

जो व्यक्ति भीतर के अंधकार को पहचानता है, वही शिव की ज्योति में प्रवेश करता है। जब चेतना का प्रवाह भीतर से उठता है, तब जीवन में केवल प्रकाश ही प्रकाश रह जाता है।

मन की चंचलता : साधना की सबसे बड़ी चुनौती

आज हर व्यक्ति यही कहता है — हमारा मन स्थिर नहीं रहता, क्या करें?

मन का स्थिर न रहना ही आधुनिक युग की सबसे बड़ी व्याधि है। मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार — ये हमारे अंतःकरण के चार अंग हैं।



हम अपने अंतःकरण को जिस दिशा में उद्देश्य देंगे, वही हमारी चेतना का केंद्र बन जाता है।

यदि हम शिवभक्ति का उद्देश्य रखें, तो

मन उसी पर मनन करेगा,

चित्त उसी में चिंतन करेगा,

बुद्धि उसी का निर्णय करेगी,

और अहंकार उसी में अपनी सत्ता खोजेगा।

लेकिन यदि उद्देश्य अस्पष्ट है, तो मन अस्थिर रहेगा।

इसलिए मन को शिवभावना में लगाना, यज्ञ का प्रथम चरण है।



यज्ञ : संस्कृति का शाश्वत सार

गुरूदेव ने कथा के दौरान कहा —

यदि हमारी प्राचीन संस्कृति को किसी एक शब्द में समेटना हो तो वह शब्द है — यज्ञ।

यज्ञ शब्द संस्कृत की यज धातु से बना है, जिसका अर्थ होता है — देवपूजन, दान और संगतिकरण।

यानी, अपने स्वार्थ का अर्पण और परमार्थ का समर्पण ही यज्ञ है।

यज्ञ केवल अग्नि में आहुति डालना नहीं, बल्कि अपने अहंकार, वासना, और मोह को अग्नि में अर्पित कर देना ही सच्चा यज्ञ है।

यज्ञ वह कर्म है जो स्वयं के लिए नहीं, सबके लिए किया जाता है।

वेद और यज्ञ एक दूसरे के पूरक

वेद और यज्ञ का संबंध शरीर और आत्मा जैसा है।

वेदों के बिना यज्ञ संभव नहीं, और यज्ञ के बिना वेद निष्प्राण हैं।

यजुर्वेद में कहा गया है —

जो यज्ञ को त्यागता है, उसे स्वयं परमात्मा त्याग देता है।

वेदों का प्रत्येक मंत्र यज्ञ के उद्देश्य को ही पुष्ट

करता है। जैसे मिट्टी में मिला अन्नकण सैकड़ों गुना बढ़ता है, वैसे ही मंत्रोच्चारण के साथ अग्नि में अर्पित पदार्थ हजारों गुना फल देता है।

यज्ञ के विविध रूप

भारतीय परंपरा में यज्ञ के अनेक रूप प्रचलित हैं —

रुद्र यज्ञ – आत्मशुद्धि और शिवत्व प्राप्ति के लिए।

सूर्य यज्ञ – स्वास्थ्य और ऊर्जा के लिए।

गणेश यज्ञ – विघ्ननाश और शुभारंभ हेतु।

लक्ष्मी यज्ञ – ऐश्वर्य और समृद्धि के लिए।

चंडी यज्ञ – शक्ति और विजय के लिए।

भागवत यज्ञ, नवग्रह शांति यज्ञ आदि।

इन यज्ञों के माध्यम से व्यक्ति न केवल लौकिक कल्याण प्राप्त करता है, बल्कि पारलौकिक उन्नति भी करता है।

यज्ञ का आध्यात्मिक अर्थ

यज्ञ केवल बाहरी अनुष्ठान नहीं है। यह हमारे भीतर के परिवर्तन का प्रतीक है।

जब हम अपने स्वार्थ को त्यागकर सर्वहित की भावना अपनाते हैं, वही यज्ञ है।

जब हम क्रोध की अग्नि को करुणा में बदलते हैं, वह भी यज्ञ है।

जब हम अपने कर्मों को परमात्मा को अर्पित करते हैं, वही यज्ञ की पूर्णता है।

वेद कहते हैं —

यज्ञ से ही देवता प्रसन्न होते हैं, और देवता जब संतुष्ट होते हैं, तो वर्षा, अन्न, और जीवन की समृद्धि होती है।

यज्ञ – जीवन का विज्ञान और साधना

यज्ञ केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं, बल्कि ऊर्जा संतुलन का विज्ञान भी है।



जब अग्नि में घी, जड़ी-बूटियाँ और मंत्रों का कंपन एक साथ मिलते हैं, तो वातावरण में सकारात्मक आयन उत्पन्न होते हैं, जो शुद्धता और स्वास्थ्य को बढ़ाते हैं।

यज्ञ से वायु शुद्ध, वातावरण पवित्र, और मन एकाग्र होता है।

गायत्री माता और यज्ञ पिता

शास्त्रों में कहा गया है —

गायत्री माता है और यज्ञ पिता।

गायत्री से हमें प्रेरणा और बुद्धि की शुद्धता मिलती है, जबकि यज्ञ से कर्म की पवित्रता।

जब विचार और कर्म दोनों पवित्र हों, तभी जीवन में शिवत्व का उदय होता है।

निष्कर्ष : यज्ञ ही जीवन की पूर्णता है

यज्ञ केवल हवनकुंड की अग्नि में नहीं, बल्कि प्रत्येक शुभ कर्म, शुभ भावना और समर्पित प्रयास में जीवित रहता है।

जो व्यक्ति अपने जीवन को यज्ञ बना देता है —



उसका प्रत्येक कार्य पूजा बन जाता है,

प्रत्येक वाणी मंत्र बन जाती है,

और उसका हर श्वास शिव के नाम का जप बन जाता है।

इसलिए कहा गया है —

जो यज्ञ को त्यागता है, उसे स्वयं परमात्मा त्याग देते हैं।

यज्ञ करो — अपने भीतर भी, अपने कर्मों में भी, अपने विचारों में भी।

तभी शिव का साक्षात्कार संभव है, और तभी जीवन में सच्चा समाधान — सच्ची समाधि — प्राप्त होती है।

मन का एक जगह न ठहरना ये आज सबसे बड़ी समस्या है। लोग कहते हैं कि हम क्या करें? हमारा तो मन ही शिव भक्ति में एक जगह नहीं ठहरता है। आखिर कैसे स्थिर करें चंचल मन को। आप सभी इस बात को ऐसे समझें हमारे अंतरःकरण के चार अंग हैं मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार ! हम अंतःकरण को जो भी उद्देश्य देंगे, हमारा अंतरूकरण उसी उद्देश्य को पूरा करने में जुट जायेगा। मन उसी पर मनन करेगा, चित्त में उसी का चिन्तन चलेगा, बुद्धि उसी का निश्चय करेगी अहंकार उसी में स्वयं को स्थापित कर लेगा। अगर हमारा अंतःकरण किसी उद्देश्य की प्राप्ति में संलग्न न हो तो वह उद्देश्य कभी पूरा हो ही न पायेगा ! अंतःकरण ही वह उपकरण वह यंत्र है , जो हमें अस्तित्व ने हमारी सिद्धियों को प्राप्त करने के लिए दिया है। हमारा मन यह भी जानता है कि अगर उसे ह्यमोक्ष का उद्देश्य दिया जाए , तो वह उसका विषय उसका कार्य नहीं है। स्वयं को सत्य जानने के लिए न तो मन की आवश्यकता है , ना चिन्तन की , ना यह बुद्धि का विषय है ना अहं का।

नवग्रह शांन्ति, वास्तु दोष, गृह शुद्धि का सरल उपाय

माँ कल्याणी सेवाश्रम™

शुद्ध धूनी

नजर दोष, वास्तु दोष, आरोग्य और सुख शान्ति समृद्धि के लिए गाय के उपले पर प्रयोग करें। और पूरे घर दुकान, फैक्ट्री मे इसका धुआं दें।

अच्छे परिणाम के लिये एक लोंग को जोड़ा घी में डुबो के पहले रखें।

M: 9990844047

बेल्हा माई शक्तिपीठः जहां माता सती की शक्ति आज भी विद्यमान है



अनमोल झा



भारतभूमि देवी आराधना की भूमि रही है। यहाँ हर प्रदेश, हर ग्राम में किसी न किसी रूप में देवी की शक्ति प्रतिष्ठित है। इन्हीं 51 पवित्र शक्तिपीठों में से एक है बेल्हा माई शक्तिपीठ, जो उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले में स्थित है।

माता बेल्हा का यह मंदिर न केवल आस्था का केंद्र है, बल्कि पौराणिक इतिहास से भी गहराई से जुड़ा हुआ है।

ऐसा माना जाता है कि त्रेतायुग में भगवान श्रीराम ने वनगमन के दौरान यहीं पर आदिशक्ति की पूजा-अर्चना की थी।

पौराणिक कथाः सती के शरीर का खंडन

पौराणिक ग्रंथों के अनुसार, जब माता सती ने अपने पिता दक्ष के यज्ञ में अपमान सहन न कर आत्मदाह कर लिया, तब भगवान शिव शोक में सती के शरीर को लेकर तांडव करने लगे। ब्रह्मांड की रक्षा हेतु भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र से सती के शरीर के खंड किए, जिससे उनके शरीर के अंग विभिन्न स्थलों पर गिरे।

इन्हीं स्थलों को शक्तिपीठ कहा गया।

मान्यता है कि माता सती की कमर (बेला) का भाग इसी स्थान पर गिरा था, जिसे स्थानीय भाषा में बेला कहा गया और कालांतर में यह नाम बेल्हा माई के रूप में प्रसिद्ध हो गया।



बेल्हा माई मंदिर का दिव्य वैभव

यह मंदिर प्रतापगढ़ के सई नदी के किनारे स्थित है। चारों ओर हरियाली और शांत वातावरण इस स्थान को और अधिक पवित्र बनाता है। नवरात्रि के दिनों में यहाँ भक्तों की अपार भीड़ उमड़ पड़ती है। मंदिर में घंटियों की गूंज, नारियल और चुनरी से सजी थालियाँ, माता की आरती के साथ भक्ति की ऐसी लहर उठती है कि वातावरण अद्भुत हो जाता है।

कहा जाता है — जो श्रद्धा और सच्चे मन से मां बेल्हा के दरबार में आता है, उसकी हर मनोकामना पूर्ण होती है।

त्रेतायुग का प्रसंगः प्रभु श्रीराम की उपासना

त्रेतायुग के उस समय की कथा है जब प्रभु श्रीराम अपने पिता दशरथ की आज्ञा का पालन करते हुए अयोध्या से वनगमन के लिए निकले थे। यात्रा के दौरान उन्होंने जब सई नदी के तट पर विश्राम किया, तब उन्होंने बेल्हा देवी का पूजन किया।

उन्होंने आदिशक्ति से अपने कठिन संकल्पों को पूरा करने की शक्ति मांगी।

माता ने उन्हें सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने का आशीर्वाद दिया और श्रीराम आगे दक्षिण की दिशा में प्रस्थान कर गए। यह वही स्थान माना



प्रतापगढ़ मां बेल्हा देवी मंदिर

जाता है जहाँ आज बेल्हा माई का यह शक्तिपीठ स्थित है।

धार्मिक महत्व और श्रद्धा का केंद्र

इस मंदिर को उत्तर भारत का प्रमुख शक्तिपीठ माना जाता है।

यहाँ प्रतिवर्ष नवरात्रि, चैत्र मास, और शारदीय उत्सवों के दौरान लाखों भक्त दर्शन के लिए आते हैं।

मंदिर परिसर में स्थित अखण्ड ज्योति सदियों से जल रही है।

स्थानीय मान्यता है कि सच्चे मन से की गई प्रार्थना माता तक तुरंत पहुँचती है।

आध्यात्मिक लाभ

हवन, जप, और भक्ति के माध्यम से यहां आने वाले भक्त मानसिक शांति, आत्मबल और जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं।

मंदिर के पुजारी बताते हैं कि — मां बेल्हा की कृपा से असंभव भी संभव हो जाता है। यहां की मिट्टी में अद्भुत ऊर्जा है जो भक्तों के दुःखों का निवारण करती है।

लोकआस्था और जनश्रद्धा

प्रतापगढ़, प्रयागराज, जौनपुर, रायबरेली, सुल्तानपुर, अंबेडकरनगर, यहाँ तक कि बिहार और मध्यप्रदेश से भी भक्त यहाँ पहुंचते हैं।

भक्तों की भीड़, ढोल-नगाड़ों की ध्वनि, और जय माता दी के जयकारे से मंदिर परिसर गूंज उठता है।

नवरात्र में यहाँ भव्य मेले का आयोजन होता है, जिसमें श्रद्धालु देवी के दर्शन के साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आनंद लेते हैं।

मां बेल्हा की आराधना का संदेश

मां बेल्हा माई केवल प्रतापगढ़ की देवी नहीं, बल्कि वह आस्था, शक्ति और संरक्षण की प्रतीक हैं।

जो भी भक्त सच्चे भाव से उनके चरणों में समर्पित होता है, उसके जीवन से अंधकार मिट जाता है और सुख, शांति तथा समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है।

बेल्हा धाम के बारे में पता चली. वो है इसका त्रेतायुग से कनेक्शन. ये कथा है भगवान श्रीराम के बनवास की. जब वो अयोध्या का सिंहासन छोड़ अपने पिता के आदेश पालन करने वनवास के लिए निकले, तब सबसे बड़ा संकट अयोध्या के राजकाज के सामने खड़ा हो गया.

छोटे भाई भरत ने सिंहासन पर बैठने से मना कर दिया और भाई की तलाश में वन वन भटकने लगे.रामचरित मानस की कथा के मुताबिक, बड़े भाई श्रीराम से मुलाकात के बाद भरत ने ये प्रण कर लिया, कि वो उनके आने तक कभी अयोध्या के सिंहासन पर नहीं बैठेंगे. हालांकि वो उनका राजकाज तो चलाएंगे, लेकिन उनकी चरणपादुका का के साथ.

पौराणिक कथा के मुताबिक अयोध्या वापसी के दौरान भरत इस मंदिर में आए थे और इसकी दिव्य गाथा सुनकर यहां शीश नवाया था. तब बेला साम्राज्य की नगरदेवी के रूप में मशहूर थी बेल्हा देवी. इस मंदिर का निर्माण अवध के राजा प्रताप बहादुर सिंह ने साल 1811 से 1815 के दौरान कराया था. मंदिर के गर्भगृह में बेल्हा देवी की पूजा पिंडी के रूप में की जाती है. मंदिर में माता रानी की संगमरमर की मूर्ति स्थापित है. प्रतापगढ़ और आस पास के इलाके में इन्हें कुलदेवी का दर्जा प्राप्त है.





घर में सुख-संपदा के लिए करें ये उपाय



एस्ट्रो रेणु शर्मा
टैरो रीडर, न्यूमरोलॉजिस्ट
वैदिक एस्ट्रोलॉजी
Mob : 9643264667, 9643264667
astrorenuu.co.in

धन के अभाव में व्यक्ति का जीवन निर्वाह कठिन हो जाता है और कई बार कठिन परिश्रम के उपरान्त भी वह धन कमाने में असमर्थ रह जाता है। इस लेख में मैं आपको लक्ष्मी प्राप्ति के कुछ सरल उपाय बता रही हूँ। आशा है इन्हें अपनाकर आप अपना जीवन सुखमय बनाने का प्रयास करेंगे। मेरा उद्देश्य केवल यही है कि आप धन धान्य से संपन्न हो व महालक्ष्मी की कृपा आप पर बनी रहे।

● अगर आप अपने जीवन में सुख बनाए रखना चाहते हैं तो इसके लिए शुक्रवार के दिन बाजार से मां लक्ष्मी की कमल के फूल पर बैठी हुई एक तस्वीर लाएं और अपने मन्दिर में स्थापित करें। इसके बाद देवी मां को सबसे पहले पुष्प अर्पित करें फिर धूप-दीप आदि से उनकी पूजा करें।

● अगर आप अपने सौभाग्य में बढ़ोतरी करना चाहते हैं तो इसके लिए शुक्रवार के दिन एक रुपए का सिक्का लें और उसे अपने मन्दिर में मां लक्ष्मी के आगे रख दें। अब सबसे पहले मां लक्ष्मी की उचित प्रकार से पूजा-अर्चना करें। फिर उस सिक्के की भी उसी प्रकार से पूजा करें और शुक्रवार को पूरे दिन उसे मन्दिर में ही रखा रहने दें। अगले दिन उस सिक्के को उठाकर एक लाल कपड़े में बांधकर अपने पास रख लें। शुक्रवार के दिन यह उपाय करने से आपके सौभाग्य में बढ़ोतरी होगी।

● अगर आप अपना स्वास्थ्य अच्छा बनाए रखना चाहते हैं तो शुक्रवार के दिन आपको देवी लक्ष्मी के मन्दिर में शंख चढ़ाना चाहिए। साथ ही देवी मां को घी और मखाने का भोग लगाना चाहिए और उनके आगे हाथ जोड़कर अपने अच्छे स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। शुक्रवार को ऐसा करने से आपका स्वास्थ्य अच्छा बना रहेगा।

● अगर आप अपनी धन-सम्पदा में बढ़ोतरी करना चाहते हैं तो इसके लिए शुक्रवार के दिन एक छोटा-सा मिट्टी का कलश लें और उसे चावल से भर दें। चावल के ऊपर एक रूपए का सिक्का और एक हल्दी की गांठ रखें।

अब उस पर ढक्कन लगाकर, मां लक्ष्मी का आशीर्वाद लेकर उसे किसी मन्दिर के पुजारी को दान कर दें। शुक्रवार के दिन ऐसा करने से आपकी धन-सम्पदा में खूब बढ़ोतरी होगी।

● अगर आप किसी महत्वपूर्ण डील के लिए शुक्रवार के दिन कहीं बाहर जा रहे हैं और आप उसमें अपनी सफलता सुनिश्चित करना चाहते हैं तो शुक्रवार के दिन आपको घर से बाहर जाते समय पहले लक्ष्मी मां को प्रणाम करना चाहिए, उनका आशीर्वाद लेना चाहिए। उसके बाद थोड़ा-सा दही-चीनी खाकर, पानी पीकर घर के बाहर जाना चाहिए।

● अगर आप अपने बिजनेस में आर्थिक रूप से लाभ पाना चाहते हैं, अपने बिजनेस को बहुत आगे तक ले जाना चाहते हैं। तो शुक्रवार के दिन आपको स्नान आदि के बाद साफ कपड़े पहनकर, आसन पर बैठकर मां लक्ष्मी के मंत्र का जप करना चाहिए। मंत्र है-ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः। इस मंत्र का कम से कम 11 बार जप करना चाहिए।

● अगर आप चाहते हैं कि आपके घर की तिजोरियां हमेशा धन से भरी रहें और आपके ऊपर मां लक्ष्मी की कृपा बनी रहे, तो इसके लिये शुक्रवार के दिन आपको स्नान आदि के बाद एक कटोरी में थोड़ी-सी हल्दी लेनी चाहिए और उसे पानी की सहायता से घोलना चाहिए।

अब इस हल्दी से अपने घर के बाहर मेन गेट के दोनों तरफ पहले जमीन पर छोटे-छोटे पैर के चिन्ह बनाएं। फिर गेट के दोनों तरफ दीवार पर एक-एक स्वास्तिक का चिन्ह बनाएं और देवी लक्ष्मी का ध्यान करें।

● नित्य प्रातःकाल उठकर भगवती लक्ष्मी की प्रतिमा को प्रणाम करें व लाल पुष्प अर्पित करें।

● घर के खाने में से पहली रोटी गाय के लिए निकालें।

● अपने खाने का कुछ हिस्सा कौओं व पक्षियों को डालें।

● रात को बर्तन साफ कर रखें। जूठे बर्तन रसाई में ना छोड़े।



● पीपल के पत्ते पर राम लिखकर उस पर कुछ मीठा रखकर हनुमान मंदिर में चढ़ाएं।

● शुक्रवार से शुरू कर नित्य सांयकाल में महालक्ष्मी या तुलसी के समक्ष गाय के घी का दीपक जलायें।

● आटा सदैव शनिवार को ही पिसवाएं व उसमें थोड़ा काला चना भी डाल दें।

● चीटियों को आटे में बूरा चीनी मिलाकर डाला करें।

● तीन शुक्रवार लक्ष्मी नारायण मंदिर में 11 कन्याओं को खीर व मिश्री खिलाएं व उपहार दें।

● झाड़ू हमेशा ऐसी जगह रखें जहां किसी को दिखाई न दें।

● प्रत्येक अमावस्या पर घर की सफाई कर गंगाजल में थोड़ा गोमूत्र मिलाकर घर में छिड़के व पांच अगरबत्ती जलाएं।

● गुरुवार के दिन तीन अभिमंत्रित गोमती चक्र, तीन पीली कौड़ियां व तीन हल्दी की गांठ को पीले कपड़े में बांधकर तिजोरी में रखें।

● संध्या के समय घर में -झाड़ू-पोछा न करें।

● संध्या होने पर पूरे घर में बिजली जलाकर प्रकाश करें।

● धन के कार्य के लिए अगर घर से निकलें तो मीठा दही खाकर निकलें।

● 39 शुक्रवार को किसी सुहागन स्त्री को सुहाग व श्रृंगार की वस्तु दें।

● काली हल्दी को सिंदुर लगाकर, धूप दिखाकर एक दो सिक्कों के साथ लाल कपड़े में लपेटकर तिजोरी में रखें।

● 11 कौड़ियों को सिंदूर लगाकर पीले कपड़े में बांधकर धन के स्थान पर रखें।

● श्रीयंत्र को पूजा स्थान में रखकर उसकी पूजा करें। फिर उसे लाल वस्त्र में लपेटकर धन स्थान पर रखें।



रखें।

● दरिद्र व्यक्तियों को भोजन कराएं व दान दें।

● असहाय व्यक्ति की निःस्वार्थ भाव से सेवा करें व उसका तिरस्कार या उपहास न करें।

● नारियल को चमकीले, लाल कपड़े में लपेटकर धन स्थान पर रखें।

● नित्य श्रीसूक्त का पाठ करें।

● घर में एकाक्षी नारियल रखें।

● प्रत्येक शनिवार घर से मकड़ी के जाले, टूटा फूटा सामान व पुरानी न इस्तेमाल की वस्तुएं हटा दें।



● सुबह उठकर अपने दोनों हाथों की हथेलियों को देखें, चूमे, रगड़े व अपने चेहरे पर 3 या 4 बार फेरें।

● प्रत्येक बृहस्पतिवार को जल में थोड़ा दूध मिलाकर तुलसी को अर्पित करें।

● नौ बत्तियों का दीपक माँ लक्ष्मी/भगवती के आगे जलाएं।

● शनिवार काले कुत्ते की सेवा करें।

● नित्य केसर या पीले चंदन का तिलक करें।

● रविवार गाय को गेहूँ व गुड़ खिलाएं।

● शनिवार हनुमान जी को 20 बादाम चढ़ाएं, फिर 10 बादाम वापिस लाकर लाल कपड़े में बांधकर गल्ले में रखें।

● नित्य प्रातः गृहिणी घर के मुख्य द्वार पर एक लोटा जल भरकर छिड़काव करें।

● एकाक्षी नारियल, दक्षिणवर्ती शंख, हत्था जोड़ी, बिल्ली की जेर, एकमुखी रूद्राक्ष, गोरोचन, नागकेसर, मोर पंख, अश्वगंध आदि घर में रखें इनसे लक्ष्मी प्रसन्न होगी।

सनातन धर्म : ब्रह्मांड का शाश्वत सत्य और मानवता का आधार

जब सृष्टि ने अपनी पहली सांस ली, जब ध्वनि ॐ के रूप में गूंजी, उसी क्षण से आरंभ हुआ था सनातन धर्म — एक ऐसा जीवन-दर्शन जो समय, स्थान और सीमाओं से परे है।

यह न किसी व्यक्ति द्वारा स्थापित किया गया मत है, न किसी काल विशेष की उपज; यह स्वयं सृष्टिकर्ता द्वारा प्रतिष्ठापित वह नियम-संहिता है जो सृष्टि के हर जीव और तत्व के अस्तित्व का आधार है।



सनातन धर्म का अर्थ और स्वरूप

सनातन का अर्थ है — जो सदैव है, जो कभी नष्ट नहीं होता और धर्म का अर्थ है — जो धारण करता है, जो अस्तित्व को टिकाए रखता है।

अर्थात सनातन धर्म वह शाश्वत सिद्धांत है जो इस ब्रह्मांड की गति, व्यवस्था और संतुलन को संचालित करता है।

यह केवल पूजा-पद्धति या परंपरा नहीं, बल्कि जीवन को समझने, जीने और परिष्कृत करने की एक दिव्य प्रक्रिया है।

वेदों में कहा गया है —

धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा।

अर्थात धर्म ही इस जगत का आधार है।

यदि सूर्य, चंद्रमा, वायु और पृथ्वी अपने धर्म से विचलित हो जाएँ तो सृष्टि असंतुलित हो जाएगी — यही नियम मानव जीवन पर भी लागू होता है।

वेद : ज्ञान का प्राचीनतम स्रोत

सनातन धर्म के चार वेद — ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद — न केवल धार्मिक ग्रंथ हैं, बल्कि विज्ञान, दर्शन, चिकित्सा, खगोल और नीति के अद्भुत स्रोत हैं।



ऋग्वेद में धर्म शब्द का प्रयोग पहली बार हुआ, जहाँ यह संकेत था कि सृष्टि के प्रत्येक तत्त्व को निर्धारित पथ का पालन करना चाहिए।

वेदों के चार भाग हैं —

संहिता — प्रार्थनाएँ, मंत्र और भजन

ब्राह्मण ग्रंथ — संस्कारों और यज्ञों की महत्ता

आरण्यक — वानप्रस्थ जीवन की साधना

उपनिषद — आत्मा और ब्रह्म का अद्वैत ज्ञान

उपनिषद ही वेदों का सार हैं, जिन्हें ह्लवेदांतह्व कहा गया है।

इनमें कहा गया है —

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय।

(असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो।)

वसुधैव कुटुम्बकम : विश्व एक परिवार

महा उपनिषद का यह महान सूत्र — वसुधैव

कुटुम्बकम — सनातन धर्म की आत्मा है।

यह कहता है कि सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है, और प्रत्येक जीव उसी परमात्मा की अभिव्यक्ति है।

इसी भावना ने भारत को युद्ध, हिंसा और धर्मांतरण से सदैव दूर रखा।

अन्य पंथों ने जहां अपने अनुयायियों का विस्तार बल, लालच और प्रचार से किया, वहीं सनातन धर्म ने सहिष्णुता और समरसता को अपने अस्त्र के रूप में चुना।

इसी कारण हिन्दू समाज ने कभी किसी पर आक्रमण नहीं किया, बल्कि दूसरों को अपनाने की अद्भुत क्षमता दिखाई।

इतिहास और महाकाव्य : धर्म के जीवंत उदाहरण

रामायण — मयार्दा का आदर्श

ऋषि वाल्मीकि द्वारा रचित यह ग्रंथ भगवान श्रीराम के आदर्श जीवन का प्रतीक है।

रामायण सिखाती है कि धर्म केवल पूजा नहीं, बल्कि कर्तव्य और चरित्र का पालन है।

महाभारत — नीति और न्याय का महासागर

ऋषि व्यास द्वारा रचित यह महाकाव्य धर्म, अधर्म और कर्म का महान ग्रंथ है।

इसमें निहित श्रीमद्भगवद्गीता मानवता के लिए सर्वोत्तम उपदेश है, जहाँ भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं

स्वधर्मे निधनं श्रेयः, परधर्मो भयावहः।

(अपने धर्म का पालन करना श्रेष्ठ है, चाहे मृत्यु ही क्यों न हो।)



धर्मशास्त्र : आचरण और न्याय का मार्ग

वेदों के पश्चात धर्मशास्त्रों ने समाज को नैतिकता और विधि का ढाँचा प्रदान किया।



मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, नारद स्मृति, विष्णु स्मृति, बृहस्पति स्मृति, कात्यायन स्मृति — ये सभी ग्रंथ जीवन के हर क्षेत्र में कर्तव्य, नीति, और न्याय का मार्ग दिखाते हैं।

इनमें विवाह, शिक्षा, शासन, अपराध, दंड और तपस्या तक के नियम दिए गए हैं — ताकि समाज में संतुलन और अनुशासन बना रहे।

सनातन धर्म का वैश्विक दृष्टिकोण

सनातन धर्म का कोई आरंभ या अंत नहीं है।

यह नदियों की तरह प्रवाहित होता हुआ समय के साथ नई परिस्थितियों में भी अपनी आत्मा को जीवित रखता है।

यह धर्म कहता है —

एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।

(सत्य एक है, ज्ञानी उसे अनेक रूपों में कहते हैं।) यही कारण है कि सनातन धर्म ने कभी मतभेद को द्वेष में नहीं बदला, बल्कि विविधता में एकता की भावना को पोषित किया।

आज भी इसकी शिक्षाएँ — सत्य, अहिंसा, करुणा, सेवा और संतुलन — विश्व के लिए सबसे बड़ा सन्देश हैं।

इन गूढ़ रहस्यो को जाने बिना असंभव है भगवत्प्राप्ति



सुदर्शनाचार्य जी महराज



तद्ब्रह्म किमध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम। आध भूते च किं प्रोक्तमधिदैवं कि मुच्यते।। अर्थात ब्रह्म क्या है? आत्मा क्या है, सकाम कर्म क्या है, यह भौतिक जगत क्या है, देवता क्या हैं? आदि प्रश्नों का उत्तर देने के लिए अर्जुन भगवान श्री कृष्ण से प्रार्थना करते हैं। ध्यातव्य है कि अर्जुन ने परमेश्वर को पुरूषोत्तम या परम पुरूष कहकर संबोधित किया है जिसका अर्थ यह होता है वे ये सारे प्रश्न अपने एक मित्र से नहीं अपितु परम पुरुष से उन्हें परम प्रमाण मानकर, पूछ रहे थे, जो निश्चित उत्तर दे सकते थे। अधियज्ञः कथं नियतात्मभिः एक अन्य श्लोक में भगवान को अधियज्ञ व मधुसूदन कहकर संबोधित किया है। अधियज्ञ का अर्थ विष्णु या इंद्र हो सकता है। विष्णु सभी देवताओं में जिनमें ब्रह्मा तथा शिव सम्मिलित हैं, प्रधान देवता हैं और इंद्र प्रशासक देवताओं में प्रधान हैं।

इंद्र व विष्णु जी की पूजा यज्ञ के द्वारा की जाती है। किंतु अर्जुन प्रश्न करते हैं कि वस्तुतः यज्ञ का स्वामी कौन है और भगवान किस तरह जीव के शरीर के भीतर निवास करते हैं। मधुसूदन शब्द से तात्पर्य यह है कि एक बार श्री कृष्ण ने मधु नामक असुर का वध किया था। मधु नामक असुर से आसुरी प्रवृत्तियों से निवृत्ति चाहते हुये अर्जुन इस प्रकार के यक्ष प्रश्न कर रहे हैं। किंतु मधुसूदन उसे इसके निवारण का रास्ता जरूर बतलायेंगे यह वे जानते हैं। महाराज कुलशेखर (अर्जुन) श्री कृष्ण जी से कहते हैं कि हे भगवान इसमें मैं व मेरा मन पूरी तरह से स्वस्थ है यदि मैं आपके चरण कमलों का स्मरण करते हुये तुरंत मर जाऊं तो मुझे विश्वास है कि आपके प्रति मेरी भक्ति पूर्ण हो जायेगी। किंतु मुझे यदि अपनी सहज मृत्यु की प्रतीक्षा करनी पड़े तो मैं नहीं जानता कि क्या होगा क्योंकि उस समय मेरा शरीर कार्य करना बंद कर देगा, मेरा गला रूंध जायेगा और मुझे पता नहीं कि मैं आपके नाम का जप कर पाऊंगा या नहीं।



अच्छा यही होगा कि मुझे तुरंत मर जानें दें। अर्जुन प्रश्न करता है कि ऐसे समय मनुष्य किस तरह कृष्ण के चरण कमलों में अपने मन को स्थिर कर सकता है? जिज्ञासु अर्जुन को भगवान कहते हैं कि अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्म मुच्यते। भूत भावोद भवकरो विसर्गः कर्म संज्ञितः।। अर्थात - ब्रह्म अविनाशी तथा नित्य है और इसका विधान कभी भी नहीं बदलता। किंतु ब्रह्म से भी परे परब्रह्म होता है। ब्रह्म का अर्थ है जीव तथा परब्रह्म का अर्थ भगवान है। जीव का स्वरूप भौतिक जगत में उसकी स्थिति से भिन्न होता है। भौतिक चेतना में उसका स्वभाव पदार्थ पर प्रभुत्व जताना है, किंतु आध्यात्मिक चेतना या कृष्ण भावनामृत में उसकी स्थिति परमेश्वर की सेवा करना है। अंतकाले च मामेव स्मरन्मुक्तकर कलेवरम यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशय।। यं यं वापि स्मरन्यावं त्यजत्यन्ते कलेवरम। तं तमेवैति कौन्तेयं सदा तद्भाव भावितः।।

भगवान कहते हैं कि मेरा (कृष्ण) नाम स्मरण करते-करते प्राणों का त्याग करने वाला मुझमें ही (कृष्ण) समाहित हो जाता है। इसमें किसी भी प्रकार का संशय नहीं है। मद्भाव अर्थात दिव्य स्वभाव की प्राप्ति। स्मरण शब्द से ही कृष्ण भावनामृत का सोपान होता है अर्थात स्मरण उस अशुद्ध जीव से नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त भगवन उपदेश देते हुये कहते हैं कि अंत समय में मनुष्य जिस-जिस भाव का स्मरण करेगा वह उस

भाव को निश्चत ही प्राप्त करेगा। यही विधि का विधान है। यहां श्रीकृष्ण जी ने कहा है कि यह आवश्यक नहीं कि मुझे स्मरण करने वाला मुझको ही प्राप्त न हो, अपितु उसकी भावना भी मुझमें यदि होगी तो वह इस जीवन रूपी बंधन से हमेशा-हमेशा मुक्त हो जायेगा। इस प्रकार आपका अगला जीवन भी सिद्ध हो जायेगा। इसके अतिरिक्त भगवान कहते हैं कि जो मनुष्य अपने प्राण को योग शक्ति से भौहों के मध्य स्थिर कर लेता हुआ परमेश्वर स्मरण में लगाता है वह भी निश्चित रूपेण मुझे प्राप्त कर लेता है अर्थात योग का जीवन में बहुत महत्व है।

योग का अध्यात्म से नीर-क्षीर संबंध है क्योंकि मन को विचलित होने से रोकने के लिए योग अत्यावश्यक है तथा अध्यात्म परम सिद्धि के लिए अत्यावश्यक है। यदक्षरं वेदविदो वदन्ति विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः।। यदिच्छन्नो ब्रह्मचर्य चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण प्रवक्ष्यै।। वेदों को जानने वाले, ओंकार का उच्चारण करने वाले जो विलक्षण संन्यासी हैं वे ब्रह्म में प्रवेश करते हैं। ऐसी सिद्धि की इच्छा करने वाले ब्रह्मचर्य व्रत का अभ्यास करते हैं। अब मैं तुम्हें वह विधि बताऊंगा जिससे कोई भी व्यक्तिगत मुक्ति-लाभ कर सकता है। समस्त ऐन्द्रिय क्रियाओं से विरक्ति को योग की स्थिति (योग धारणा) कहा जाता है। इन्द्रियों के समस्त द्वारों को बंद करके तथा मन को हृदय में और प्राणवायु को सिर पर केन्द्रित करके मनुष्य अपने को योग में स्थापित करता है। गीता समस्त योग पद्धतियों में से भक्ति योग की ही संस्तुति करता है।



भक्ति योगी पांच प्रकार की भक्ति में लगे रहते हैं:

1. शांत भक्त - जो उदासीन रहकर भक्ति में युक्त होते हैं।
2. दास्य भक्त - जो दास के रूप में भक्ति में युक्त होते हैं।
3. सख्य भक्त: जो सखा के रूप में भक्ति में युक्त होते हैं।
4. वात्सल्य भक्त: जो माता-पिता की भांति भक्ति में युक्त होते हैं।
5. माधुर्य भक्त: जो परमेश्वर के साथ दांपत्य प्रेमी की भांति भक्ति में युक्त रहते हैं।

शुद्ध भक्त इनमें से किसी में भी परमेश्वर की भक्ति में युक्त होता है और उन्हें कभी नहीं भूलता, उसी प्रकार भगवान भी अपने शुद्ध भक्त को कभी नहीं भूलते अथवा स्वतः ही प्राप्त हो जाते हैं। मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम। नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमांगताः।। मुझे प्राप्त करके जो महापुरूष भक्त योगी हैं कभी भी दुःखों से पूर्ण इस जगत में नहीं लौटते अतः उन्हें परम सिद्धि प्राप्त हो जाती है तथा वे जन्म जन्मों के बन्धनों से मुक्त हो जाते हैं। भाव यह है कि यह नश्वर जगत जन्म, जरा, मृत्यु के क्लेश से पूर्ण है अतः जो परम सिद्धि प्राप्त करता है वह इस प्रकार के बंधनों व्यवधानों को काटकर परम सिद्धि को प्राप्त कर लेता है।

श्री कृष्ण की इन अमृत वचन का जरूर करें अनुसरण

पंच तत्व निर्मित इस शरीर का अंतिम लक्ष्य जीवन-मरण के बंधन से मुक्त होना है। यह किसी भी व्यक्ति के लिए तभी संभव है, जब वह धर्म मार्ग का अवलंबन करे। भगवान श्री कृष्ण ने गीता के माध्यम से समस्त संसार को मुक्त भाव से जीने का साधन दिया है। अर्जुन को माध्यम बना कर, कर्म मार्ग पर निस्पृह भाव से जीने की कला समस्त प्राणियों में आये, यही लक्ष्य था भक्त वत्सल भगवान श्री कृष्ण का। भगवान की लीलाएं त्रिलोक प्रसिद्ध हैं। उन्हीं कथाओं में से एक कथा प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। कार्तिक का महीना व्रतां-त्योहारों का महीना होता है। शरद् पूर्णिमा से ले कर कार्तिक, पूर्णिमा के मध्य भैया दूज, दीपावली, सूर्य षष्ठी व्रत, देवोत्थान एकादशी, हनुमान जयंती एवं पूर्णिमा व्रत प्रमुख हैं। यह कथा इसी कार्तिक महीने की है। कार्तिक का महीना था। भगवान अपने बाल काल में काफी चंचल थे। कार्तिक के महीने में स्त्रियां पुत्रों के कल्याण के लिए यमुना नदी में दीप दान करती हैं। अतः उसी कार्तिक महीने में माता यशोदा दीप दान हेतु प्रस्थान करने वाली थीं। भगवान कृष्ण भी उनके साथ जाने की जिद्द करने लगे। अपने बाल सुलभ हठ का प्रदर्शन करते हुए लीला पुरुषोत्तम भगवान श्री कृष्ण माता यशोदा से बोले: मईया, मं भी चलूंगा। माता यशोदा ने कहा: तू वहां मत जा। तू अगर वहां जाएगा, तो उधम मचा देगा। पुत्र के हठ के सामने तो कोई भी माता अपना संतुलन खो देती है। यहां तो जगत पिता ही पुत्र थे। अतः उनके हठ को वह कैसे टालतीं? माता यशोदा की अंगुलियां पकड़े नंदलाल यमुना की ओर प्रस्थान कर गये। ज्यों ही माता ने दीप प्रज्ज्वलित करना शुरू किया कि भगवान श्री कृष्ण यमुना की ओर प्रस्थान कर गये और मधुसूदन यमुना जी में कूद पड़े। माता ने दीप दान करने के बाद देखा कि भगवान श्री कृष्ण यमुना में बहते दीपों को किनारे लगा रहे हैं। माता यशोदा थोड़ी विचलित हुई और बोलीं: तू कर क्या रहा है नटवर? भगवान बोले: किनारे लगा रहा हूं। पुनः माता यशोदा बोली: तू किसको किनारे लगा रहा है? भगवान बोले- दीपों को माता ने कहा: क्यों? भगवान ने कहा: मैया, यही तो मेरा काम है। पुनः माता बोलीं: तो इतने असंख्य दीप जो बहते जा रहे हैं, तू उन सबको किनारे क्यों नहीं लगा देता? भगवान ने कहा: मैया, यह तो राज की बात है। माता यशोदा बोली: राज की बात? राज क्या है ? श्री गिरधर बोले: मैया, जो भी अनंत से किसी भी प्रकार बहते हुए मुझ तक आ जाता है, उसे तो मैं किनारे लगा ही देता हूं। औरों का मैंने ठेका नहीं ले रखा है। वास्तव में बहना ही तो जीवन है।

रहस्यों से भरा है श्रीकृष्ण की नगरी वृंदावन

त्रियोग के प्रवत्रतक भगवान श्री कृष्ण की लीला भूमि, मंदिरों की नगरी, वृन्दा का धाम और भारतीय तीर्थों के श्रीधाम के नामों से अलंकृत तीर्थों का देश भारतवर्ष के सदाबहार तीर्थों में सुविख्यात ब्रजप्रदेश के हृदयक्षेत्र में विराजमान वृन्दावन महाभारत काल के पूर्व से ही धर्म व अध्यात्म का केंद्र रहा है। देश के सप्त पुनीत पवित्र धामों में एक श्री कृष्ण की जन्मभूमि मथुरा से करीब 15 किमी उत्तर-पश्चिम 26.330 उत्तरी आक्षांश और 66.410 पूर्वी देशान्तर पर अवस्थित पुण्य सरिता यमुना के किनारे बारह वनों के समूह से बना विशाल वन क्षेत्र ही आज का वृन्दावन है



जो एक ओर नंदग्राम से दूसरी ओर गोवर्द्धन तक सुविस्तृत है। जिस प्रकार वाराणसी से सारनाथ, गया से बोधगया, हरिद्वार से ऋषिकेश, जगन्नाथपुरी से कोणार्क, अजमेर से पुष्कर, राजगीर से नालंदा, शिरडी से शनि-शिंगणापुर आदि तीर्थ अभिन्न रूप से जुड़ा है ठीक उसी प्रकार मथुरा से छः मील की दूरी पर बसे वृन्दावन की स्थिति है जो भारत देश के भ्रमणकालीन तीर्थ-संस्कृति का संवाहक स्थल है। श्रीमद् भागवत, हरिवंश पुराण, पद्मपुराण, ब्रह्मवैवर्तपुराण, तीर्थ दीपिका, रघुवंश सहित कितने ही प्राचीन ग्रंथों में वृन्दावन के विशद् वृत्तांत अंकित हैं। और तो और जैन साहित्य, मराठी साहित्य, बंगला साहित्य, ओडिया साहित्य और ब्रजभाषा में भी वृन्दावन से जुडे.ऐतिहासिक सांस्कृतिक विवरण उपलब्ध हैं।

वृन्दावन के नामकरण के तीन तथ्य वर्णन योग्य हैं। पहला तो यह कि श्री कृष्ण की प्राणबल्लभा श्री राधा जी के सोलह नामों में एक है वृन्दा। चूंकि राधा-कृष्ण का प्रथम रास, जिसे महारास भी कहा गया है; इसी वन में होने के कारण यह वृन्दावन कहलाया। दूसरी युक्ति यह है कि वृन्दा का आशय तुलसी से है जो श्री विष्णु को अतीव प्रिय है। प्राच्य काल में यह पूरा क्षेत्र तुलसी वृक्ष से आच्छादित होने के कारण वृन्दावन कहलाया तो एक अन्य विवरण के अनुसार राजा मंदार की पुत्री वृन्दा ने इसी वन प्रान्त क्षेत्र में कठोर साधना व तप संपन्न की जिस कारण यह क्षेत्र वृन्दावन कहलाया। नामकरण का आधार चाहे जो भी रहा हो पर यह तीर्थ नगरी आज भी पूर्णतया राधामय है। पूरे नगर में संबोधन व अभिवादन के प्रधान शब्द हैं राधे-राधे। भारतीय तीर्थों में वृन्दावन एक सदाबहार तीर्थ है।

काशी, प्रयाग और गया की भांति वृन्दावन का विस्तार पंचयोजन है जहां देव दर्शन के क्रम में झांसी के अवलोकन का विशेष आनंद है।



विवरण है कि गोकुल से कंस के अत्याचार से बचने के लिए नंद जी कुटुम्बियों और सजातीय के साथ वृन्दावन चले आये थे। श्री कृष्ण के बाद यहां प्रारम्भिक निर्माण का श्रेय श्री कृष्ण के प्रपौत्र ब्रजनाभ को दिया जाता है। आगे के समय में थूरसेन जनपद के प्रमुख केंद्र के रूप में यहां की उच्च स्थिति बनी रही। कालीदास ने अपनी कृति रघुवंश में तो नरसी मेहता ने अपनी गीतों में वृन्दावन का वर्णन विवरण किया है।

महाप्रभु बल्लभाचार्य का स्थान भी वृन्दावन में ही था जहां महाकवि सूरदास दीर्घकाल तक रहे। 16वीं शताब्दी के प्रारंभिक चरण में श्री चैतन्य महाप्रभु के आगमनोपरांत इस तीर्थ की ख्याति पुनः मुखरित हुई। आगे स्वामी हरिदास, श्री हित हरिवंश, श्री निम्बकाचार्य, श्री लोकनाथ बाबा, तैलंग स्वामी, श्री अद्वैताचार्य, श्री मात्रित्यानंद पाद जी महाराज आदि महात्माओं के चरण रज से यह स्थान और भी पवित्र हुआ। इसी जमाने से यहां देवालय निर्माण का क्रम आज तक जारी है। मुगलकाल में औरंगजेब की क्रूर निगाह भी इधर पड़ी और उन्होंने वृन्दावन का नाम मोमिनाबाद रखने का भी भरसक प्रयास किया। इस काल में मथुरा-वृन्दावन के कितने ही देवालय कोपभाजन के शिकार बने पर राजे रजवाड़ों की दानभक्ति व जाट राजाओं के उद्योग से वृन्दावन की अस्मिता बनी रही। ब्रिटिश शासन काल में भी यहां उन विद्रुप-देवालयों का शृंगार उसी पुराने ढर्रे पर किया गया। देश के तपप्रधान नदियों में एक यमुना नदी वृन्दावन को तीन तरफ से घेरे है। आज जिसे रासमंडल कहा जाता है

उसके चारों ओर यमुना नदी बहती है। इसके चातुर्दिक दर्जनों मंदिर और 12 छायादार विशाल वृक्ष वाटिकाएं शोभित हैं। यमुना नदी के घाट पर

महाप्रभु बल्लभाचार्य का स्थान भी वृन्दावन में ही था जहां महाकवि सूरदास दीर्घकाल तक रहे। 16वीं शताब्दी के प्रारंभिक चरण में श्री चैतन्य महाप्रभु के आगमनोपरांत इस तीर्थ की ख्याति पुनः मुखरित हुई। आगे स्वामी हरिदास, श्री हित हरिवंश, श्री निम्बकाचार्य, श्री लोकनाथ बाबा, तैलंग स्वामी, श्री अद्वैताचार्य, श्री मात्रित्यानंद पाद जी महाराज आदि महात्माओं के चरण रज से यह स्थान और भी पवित्र हुआ। इसी जमाने से यहां देवालय निर्माण का क्रम आज तक जारी है।



पहुंचते ही मन पुरातन स्मृति में लीन हो जाता है। यहां कितने ही घाट बने बिगड़े पर जो शेष हैं उनमें केशी घाट, गोपाल घाट, गोविन्द घाट, टिकारी घाट, शृंगारवट घाट, वंशीवट घाट, चीरघाट आदि प्रमुख हैं। बरसात के दिनों में आस-पास की हरियाली मन मोहती है और इन घाटों से नौका विहार में एक अलग आनंद ही प्राप्त होता है। कहते हैं वृन्दावन में साढे पांच हजार मंदिर, सवा सौ से अधिक आश्रम और कुंज और 365 धर्मशालाएं हैं और पूरे नगर में ऐसी कोई भी गली, सड़क या मुहल्ला नहीं जहां मठ, मंदिर या आश्रम न हों।

यहां के प्रतिष्ठित देवालयों में गोविन्द देव मंदिर, रंग जी मंदिर, मदन मोहन मंदिर, श्री कृष्ण बलराम मंदिर, शाह जी मंदिर, राधा-दामोदर मंदिर, बांके बिहारी मंदिर, मानस मंदिर, श्री गोपीश्वर महादेव मंदिर, ब्रह्मचारी जी मंदिर, मीराबाई मंदिर, राधा श्यामसुंदर मंदिर, रसिक बिहारी मंदिर, सत्यनारायण मंदिर, पागलबाबा मंदिर व प्रेम मंदिर का नाम है। यहां के अन्य तीर्थ में ज्ञानगुदड़ी, हितरास मंडल, अष्टसखीधाम, वंशीवट, निकुंज आश्रम आदि में भी भक्त जरूर जाते हैं। गौ सेवा परंपरा से जुड़ा महा धाम है वृन्दावन जहां श्री कृष्ण ने भी अपने हाथों से गौ-सेवा की है।

उस जमाने में यहां नौ लाख गाएं थीं। आज भी यहां आधे दर्जन से अधिक गौशाले हैं जहां भक्त बंधु जाकर गौ सेवा में अपना योगदान अर्पित कर धन्य होते हैं।

ऐसे तो वृन्दावन में हरेक भारतीय पर्व को मनाने का अपना अलग अंदाज व ढंग है पर सर्वाधिक आकर्षण होती है यहां श्री कृष्णजन्माष्टमी। प्रारंभ काल से ही मथुरा वृन्दावन में तीर्थ परिक्रमा की बात है तो वृन्दावन में यह 4 मील का है और स्वामी वास की जो चालीस दिवसीय परंपरा है उसका भी समापन श्री कृष्ण जन्म उत्सव के बाद हो जाता है।

वृन्दावन को भारतीय तीर्थों में प्रेम की स्थली के रूप में भी अलंकृत किया जाता है। यही वह स्थल है जहां श्री कृष्ण ने गोपियों के साथ रासलीला रचाते वंशी बजाई तो राधिका ने अपने प्रियतम के विरह में करूण तान सुनाकर पूरे क्षेत्र को प्रेममय बना दिया।



लिलुआ में धीरेंद्र शास्त्री की हनुमान कथा का शुभारंभ, बाबा बोले मैं मन परिवर्तन करने आया हूँ



बंगाल में मई में हुए सत्ता परिवर्तन और भाजपा की सरकार बनने के बाद पहली बार राज्य में कथा कहने के लिए पहुंचे बागेश्वर धाम के मशहूर पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने शुक्रवार को कहा कि सत्ता परिवर्तन तो होता रहता है, मैं मन परिवर्तन करने आया हूं।

कोलकाता से सटे हावड़ा के लिलुआ स्थित रेलवे वर्कशाप ग्राउंड में दोपहर में तीन दिवसीय श्री हनुमंत कथा के शुभारंभ से ठीक पहले पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा कि जिनके मन में भारत के खिलाफ जहर भरा है, हम उनके मन में अमृत भरने आए हैं।

बागेश्वर धाम सरकार के नाम से मशहूर धीरेंद्र शास्त्री ने कथा के दौरान इशारों में पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर जोरदार हमला बोला। उन्होंने कहा कि कुछ लोग कहते थे कि हमें बंगाल में घुसने नहीं जाएगा, लो हम घुस गए। अब पूरा बंगाल भगवामय हो गया है।

उन्होंने आरोप लगाया कि पूर्ववर्ती तृणमूल सरकार पहले अनुमति नहीं देती थी, इसलिए वे कथा कहने यहां नहीं आ पाए थे। इस दौरे के पीछे किसी भी राजनीतिक उद्देश्य से इन्कार करते हुए उन्होंने कहा कि हम सिर्फ सनातनी हिंदुओं को जगाने आए हैं। बंगाल के वैसे लोग जो अभी भी सोए हुए हैं।

राम भक्ति और राष्ट्रभक्ति जगाने के लिए ही हम देशभर में जाते हैं। उन्होंने कहा कि देश में तनातनी नहीं, सनातनी परंपरा का प्रचार होना चाहिए।

पहले दिन कथा में शामिल हुए मुख्यमंत्री शुभेंदु, बागेश्वर बाबा से लिया आशीर्वाद

मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी हावड़ा के लिलुआ में बागेश्वर बाबा की हनुमंत कथा के शुभारंभ पर प्रथम दिन उपस्थित रहे। उन्होंने बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया और कथा का श्रवण किया। मुख्यमंत्री ने धीरेंद्र शास्त्री का स्वागत करते हुए कहा कि राज्य की सनातनी जनता उनकी बातें सुनने के लिए लंबे समय से इंतजार कर रही थी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हम कोलकाता के ऐतिहासिक ब्रिगेड मैदान में 10 लाख लोगों को लेकर इस तरह का एक विशाल कार्यक्रम आयोजित करेंगे। आपको वहां जरूर आना होगा।

मुख्यमंत्री ने राज्य की संस्कृति और सनातन धर्म की रक्षा के लिए सरकार की प्रतिबद्धता दोहराई। इस अवसर पर लोगों की भारी भीड़ के चलते कथा स्थल श्रद्धा और भक्ति से सराबोर नजर आया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में गुंडों और अपराधियों के खिलाफ कड़े कानून बनाए गए हैं। साथ ही सीमावर्ती क्षेत्रों में बाड़ लगाने के लिए बीएसएफ को जमीन उपलब्ध कराई गई है। उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में देश और राज्य की संस्कृति की रक्षा के लिए सरकार लगातार काम करती रहेगी।

धीरेंद्र शास्त्री ने शुभेंदु से की तीन प्रमुख मांगें, बोले- अब बंगाल में दंगे नहीं, हर-हर गंगे होना चाहिए

बंगाल में पहली बार कथा करने पहुंचे बागेश्वर बाबा ने मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी के सामने तीन बड़ी मांगें रखीं।

उन्होंने कहा कि पहली मांग है कि गंगासागर मेले को राष्ट्रीय मेला घोषित करवाया जाए, दूसरी गोमाता को राज माता का दर्जा दिया जाए और तीसरी काली पूजा या रामनवमी के दौरान गलियों- मोहल्लों में होने वाले छोटे-छोटे दंगे अब बंद होने चाहिए, अब हर-हर गंगे होना चाहिए।



समुद्र से निकली अद्भुत चीज़ें



हलाहल (विष)



चंद्र देव



ऐरावत



उच्चैश्रव





अप्सराएँ



धन्वंतरि



पारिजात



अमृत



माता लक्ष्मी



कामधेनु